



04 - सड़कों को मौत नहीं,
जीवन का रास्ता बनाए



05 - अधर्म के अंत और
अदृष्ट विश्वास का
शंखनाद है नृसिंह अवतार

A Daily News Magazine

मोपाल
गुरुवार, 30 अप्रैल, 2026



मोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 237, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2



06 - जन परिषद के
उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ
एडवोकेट अन्नी भैया...



07 - कलेक्टर ने लखित
आवेदनों की गहन
समीक्षा की

सूचना

subhasaverenews@gmail.com

facebook.com/subhasaverenews

www.subhasavere.news

twitter.com/subhasaverenews

शहर की सुबह

सुजन
सत्य नहीं
केवल सपना
रह गया है

सुजन
विनाश की पैशाचिक
बाहों में
जकड़ा हुआ है

सुजन का मुकुट
धराशायी
हो गया है

सुजन
सिंहासनटट्ट के पैरों तले
कुचला जा रहा है

सुजन
हाहाकार के घेरे में
धिरा हुआ है।

-दुर्गाप्रसाद झाला.

प्रसंगवश

ईरान युद्ध ने भारत के लिए भावी जंग का खाका पेश कर दिया है

ले.जन. एच.एस. पनाग (रिटा.)

ईरान के खिलाफ अमेरिका-इजरायल की जंग में पिछले करीब एक महीने से रणनीतिक गतिरोध जैसी स्थिति बनी हुई है। इसमें एक-दूसरे को धमकियां देना, जबन नाकाबंदी करना, और 11-12 अप्रैल को हुई अथुरी वार्ता शामिल हैं। इस युद्ध से भारत के लिए सबक क्या है?

रणनीतिक स्तर पर: भारत, चीन और पाकिस्तान परमाणु हथियारों से लैस देश हैं और वे पूर्ण पैमाने वाले पारंपरिक युद्ध में निर्णायक हार या अपनी जमीन गंवाने के कारण अपने वजूद पर होने वाले खतरे से सुरक्षित हैं। इसलिए राष्ट्रहित का ताकाजा यह होता है कि युद्ध को परमाणु युद्ध से नीचे के स्तर तक ही सीमित रखा जाए। पारंपरिक युद्ध के मामले में अपनी बढ़त रखने के कारण भारत पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामक रुख के बूते उसे खोफ में रखता है।

चीन की श्रेष्ठता के कारण भारत उसके मामले में रक्षात्मक रुख रखता है या हतोत्साहित करने की रणनीति अपनाता है। चीन की सैन्य क्षमता अमेरिकी सैन्य क्षमता से उन्नीस ही है। भारत और पाकिस्तान मझोले और उच्च स्तर की टेक्नोलॉजी के मिश्रण पर आधारित सेना रखते हैं, जिसमें भारत ने बढ़त बना रखी है। ईरान का अनुभव चीन को भारत के खिलाफ और भारत को पाकिस्तान के खिलाफ अमेरिकी शैली के हवाई/मिसाइल/ड्रोन हमलों की मुहिम चलाने को प्रेरित कर सकता है ताकि वे अपने कमजोर प्रतिद्वंद्वी पर अपनी मनमानी चला सकें।

पाकिस्तान ऑपरेशनों की विषम रणनीति अपना सकता है ताकि हवाई हमलों को पचा सके, जवाबी कार्रवाई करने के मकसद से बाकी बची पर्याप्त क्षमता

को सुरक्षित रख सके; और आर्थिक ठिकानों को निशाना बनाकर, समुद्री मार्गों को बंद करके और अंदरूनी इलाकों में ड्रोन हमलों के लिए भाड़े के साधनों का इस्तेमाल करके युद्ध को तेज कर सके। जमीनी ऑपरेशन भी सीमित स्तर पर किया जा सकता है। विषम रणनीति का लाभ यह होता है कि लड़ाई को लंबा खींचकर परमाणु युद्ध के कगार के नीचे तक लाया जा सकता है। चीन के साथ सैन्य शक्ति में अंतर के मद्देनजर भारत को विषम रणनीति अपनानी चाहिए।

एक ज्यादा ताकतवर देश का पहले से ही वचस्व, और इसके साथ एक कमजोर देश द्वारा विषम प्रतिरोध-यह दोहरापन ही भविष्य में इस उपमहादेश में भावी युद्धों का स्वरूप रहेगा। भारत के लिए सैन्य चुनौती प्रतिद्वंद्वी में खोफ पैदा करने के लिए उसकी ऑपरेशन संबंधी पारंपरिक/विषम रणनीति को परास्त करने की होगी।

उच्चस्तरीय और विषम टेक्नोलॉजी का मेल: अत्याधुनिक वेपन सिस्टम के साथ समस्या यह है कि हर पहलू को समेटने की कोशिश में उनका न केवल मुख्य वेपन सिस्टम बल्कि नष्ट होने वाली मिसाइल आदि भी बेहद महंगी हो जाती हैं। भारत की काफी असरदार 'ब्रह्मोस' मिसाइल की लागत अमेरिकी 'टॉमहॉक' मिसाइलों की लागत से लगभग दोगुनी ज्यादा है। जखूत थोड़ी सस्ती, कम आधुनिक मिसाइलों की है, जिन्हें एक साथ बड़ी संख्या में दाग कर दुश्मन के एअर डिफेंस को परास्त किया जा सके। ईरान की जो 10 फीसदी मिसाइलें कारगर रहें, उन्होंने बेहद महंगे एयर डिफेंस संचारतंत्र और कमांड-व-कंट्रोल सिस्टम को भारी नुकसान पहुंचाया। ईरान के 20-50 हजार डॉलर वाले 'शाहिद' ड्रोनों ने केवल लक्ष्यों को नष्ट किया बल्कि लागत में भारी अंतर के बूते इंटरसेप्टर मिसाइल का संकट पैदा कर दिया। ये ड्रोन 2 हजार किमी तक

जाकर मार कर सकते हैं और जल्दी ही इंटरकॉन्टिनेंटल हो सकते हैं।

भारत को उच्च स्तर की टेक्नोलॉजी आधारित ऐसा वेपन सिस्टम चाहिए, जिससे कम समय में 'सदमा और दहशत' फैलाकर सैन्य लक्ष्य हासिल किया जा सके, और विषम टेक्नोलॉजी आधारित कम लागत वाली ऐसा सिस्टम चाहिए, जिसकी मदद से ज्यादा ताकतवर दुश्मन को लंबे युद्ध में हरा सके। यानी सभी सिस्टम के बेहतर तालमेल का इस्तेमाल हो, और यह सब देसी ही हो।

अप्रत्यक्ष युद्ध: ज्यादा ताकतवर दुश्मन से लड़ने का सबसे प्रभावी तरीका 'अप्रत्यक्ष युद्ध' ही हो सकता है। कमांड एवं कंट्रोल, रक्षा व्यवस्था, और साजोसामान सबको भूमिगत कर दिया जाए। 'टनेल डिफेंस' (सुरंग) सबसे व्यावहारिक समाधान है। यहां तक कि महत्वपूर्ण सिस्टम का उत्पादन करने वाले रक्षा उद्योगों को भी भूमिगत किया जाए। ईरान के पास आज बची हुई ताकत बीते वर्षों में 'टनेल डिफेंस' के विकास की वजह से ही है।

भारतीय सेना की भौतिक सुरक्षा इस युग के लिए प्रासंगिक नहीं है। यहां तक कि विमानों के बेहद मजबूत शेल्टर और बंकर भी जमीन के ऊपर बने हुए हैं। जो बड़े हवाई, मिसाइल या ड्रोन हमलों में टिक नहीं सकते। अमेरिकी सेना को भी ईरान के मिसाइल एवं ड्रोन हमलों के मद्देनजर अपने असुरक्षित अड्डों को खाली करना पड़ा। भारत को भूमिगत युद्ध का सिद्धांत तुरंत बनाने और अपनाने की जरूरत है। ऐसे युद्ध के लिए पहाड़ सबसे माकूल हैं। बस इच्छाशक्ति चाहिए।

मिसाइल व ड्रोन सेना: रणनीति और ऑपरेशन के लिहाज से मिसाइलों और ड्रोनों की तैनाती के लिए एक अलग सेना का गठन बेहद जरूरी हो गया है। क्योंकि ये आज हवाई तथा जमीनी लक्ष्यों का पता लगाने, उन पर

हमला करने और इलेक्ट्रॉनिक/साइबर युद्ध करने के बहुदेशीय प्लेटफॉर्म बन गए हैं। वह दिन दूर नहीं जब ईरानी टेक्नोलॉजी पाकिस्तान को मिल जाएगी। रणनीति तथा ऑपरेशन से जुड़े लक्ष्यों को कम लागत वाली और अंतरिक्ष आधारित 'आइएसआर' एवं गाइडेंस व्यवस्था से जुड़ी मिसाइलों और ड्रोनों से प्रभावी रूप से निशाना बनाने के लिए एक अलग संगठन चाहिए। सामरिक स्तर की तैनाती मौजूदा संगठनों की जा सकती है।

मल्टी डोमेन ऑपरेशंस: मल्टी डोमेन ऑपरेशंस (एमडीओ) के तहत, दुश्मन को कई तरह से प्रभावित करने के लिए जमीन, समुद्र, हवा, अंतरिक्ष, साइबर, तथा सूचना के डोमेनों में सैन्य क्षमताओं का एक साथ इस्तेमाल किया जाता है। कमांड के सभी स्तरों पर कमांड एवं कंट्रोल तथा वेपन प्लेटफॉर्मों को जवाबी कार्रवाई करने के लिए एक ही सूचना तक उनकी एक साथ पहुंच होनी चाहिए। इस क्षमता के बिना 21वीं सदी का युद्ध नहीं लड़ा जा सकता।

परिवर्तन जरूरी: विडंबना यह है कि एकीकृत डिफेंस स्टाफ ने 'डिफेंस फोर्सस विजन 2047 : अ रोडमैप फॉर पयूचर-रेडी इंडियन मिलिटरी' तैयार किया है। लेकिन इसमें औपचारिक नेशनल सिक्यूरिटी विजन, नेशनल सिक्यूरिटी स्ट्रेटेजी, नेशनल डिफेंस पॉलिसी और इसके लिए अनुमानित वित्तीय व्यवस्था का कोई ख्याल नहीं रखा गया है। इसलिए सेना में चरणबद्ध परिवर्तन सुस्त गति से ही आएगा। यूक्रेन और ईरान युद्धों ने 21वीं सदी के युद्ध का खाका पेश कर दिया है। अब समय गंवाने की कोई गुंजाइश नहीं है। सरकार को 'सेना में परिवर्तन की इमरजेंसी' की घोषणा कर देनी चाहिए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बंगाल-असम में एनडीए, केरल में कांग्रेस तो तमिलनाडु में डीएमके

एग्जिट पोल 2026

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए एग्जिट पोल के नतीजे सामने आ गए हैं। चुनाव के परिणाम 4 मई को आएंगे। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए दो चरणों में मतदान संपन्न हो चुका है। दो चरणों में हुए मतदान में पहले चरण में 16 जिलों की 152 सीटों पर रिकॉर्ड 92.88 फीसदी मतदान हुआ। दूसरे चरण में 7 जिलों की 142 सीटों पर भी रिकॉर्ड मतदान हुआ है। अब तक आए 6 एग्जिट पोल में से 5 एग्जिट पोल में बीजेपी को पूर्ण बहुमत मिलता हुआ दिख रहा है तो वहीं सिर्फ एक एग्जिट पोल में टीएमसी को बहुमत है।

छह सर्वे में भाजपा को बहुमत, दो में तृणमूल की वापसी का दावा- पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के एग्जिट पोल के नतीजे बेहद दिलचस्प और चौंकाने वाले हैं। सामने आए आठ प्रमुख सर्वे में से छह में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पूर्ण बहुमत के साथ राज्य में अपनी पहली सरकार बनाती दिख रही है।

पांचों सर्वे में एनडीए को स्पष्ट बहुमत

बंगाल में जहां पांच एग्जिट पोल में भाजपा आगे है, वहीं पुदुचेरी के सभी पांच प्रमुख सर्वे में एनडीए भारी बहुमत के साथ सरकार बनाता दिख रहा है। 'प्रजा पोल' और 'कामाख्या एनालिटिक्स' के अनुमानों के अनुसार तो एनडीए 20 से ज्यादा सीटें जीत सकता है। इन रुझानों से एकदम साफ है कि पुदुचेरी की जनता ने सत्ता की चाबी एक बार फिर एनडीए गठबंधन को सौंपने का मन बना लिया है, जबकि कांग्रेस गठबंधन बहुमत के आंकड़े से काफी पीछे छूट गया है।



तमिलनाडु में द्रमुक को भारी बढ़त

एग्जिट पोल के आंकड़ों के आधार पर, तमिलनाडु विधानसभा चुनाव 2026 में द्रमुक गठबंधन को भारी बढ़त मिलती दिख रही है। सभी चार एजेंसियों के अनुमानों में द्रमुक को सबसे अधिक सीटें मिलने की संभावना जताई गई है।

- मैट्रिज - इस एजेंसी के अनुसार, सत्ताधारी द्रमुक गठबंधन को 122 से 132 सीटें मिल सकती हैं। एनडीए 87 से 100 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर रह सकता है।
- पीपल्स पल्स - इस सर्वे में द्रमुक गठबंधन को 125 से 145 सीटें मिलने का अनुमान जताया गया है। एनडीए को 65 से 80 सीटें मिल सकती हैं। टीवीके को यहां सबसे ज्यादा 18 से 24 सीटें मिलने की संभावना है।
- चाणक्य स्ट्रेटजी - इसके मुताबिक, द्रमुक+ को 145 से 160 सीटों के साथ बड़ी जीत मिल सकती है। एनडीए को 50 से 65 सीटों तक ही सीमित रहना पड़ सकता है।
- प्रजा पोल - इसके अनुसार, द्रमुक+ 148 से 168 सीटें जीतकर सबसे आगे रह सकता है। एनडीए को 61 से 81 सीटें मिलने की उम्मीद है।

दूसरे दौर में बंगाल में शाम 5 बजे तक 90 प्रतिशत वोटिंग

टीएमसी-भाजपा कार्यकर्ताओं में हिंसा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में सेकेंड फेज की 142 सीटों पर वोटिंग खत्म हो गई है। शाम 5 बजे तक 89.99 प्रतिशत वोटिंग हुई। यह आंकड़ा अंतर्गत दी जा रही यह पेंशन राशि उनके जीवनयापन में सहाय बनने के साथ-साथ उन्हें आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की प्रेरणा भी देती है।

टीएमसी और भाजपा कार्यकर्ताओं में हिंसक झड़प हुई। दोनों पार्टियों के कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को दौड़ा-दौड़ाकर मुके, लाठियों से हमले किए। भारी संख्या में सुरक्षाबलों की मौजूदगी के बावजूद हालात बेकाबू दिखे। सीएम ममता ने सीआरपीएफ पर टीएमसी समर्थकों और वोटरों से मारपीट का आरोप लगाया। ममता ने कहा कि सीआरपीएफ ने हमारे कई लोगों को गिरफ्तार किया है। वोटरों और सेट्रल ऑब्स्वर्वर लोगों को मार रहे हैं।

सामाजिक सुरक्षा पेंशन इस विश्वास का अंतरण है कि सरकार हर घड़ी जरूरतमंदों के साथ है : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

जरूरतमंदों को सम्मान और पारदर्शिता के साथ सहायता देना ही हमारा संकल्प



भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार द्वारा समाज के सभी निर्धन, निराश्रित, वृद्धजनों, कल्याणी, परित्यक्त, अविवाहिता एवं दिव्यांगजनों के कल्याण एवं आर्थिक सहायता के लिए विभिन्न प्रकार की पेंशन योजनाएं संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा दी जाने वाली यह सामाजिक सुरक्षा पेंशन राशि सिर्फ आर्थिक सहायता नहीं, यह सरकार के उस विश्वास का अंतरण है, जो इस बात का प्रतीक है कि सरकार हर परिस्थिति

में हर घड़ी जरूरतमंदों के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मंत्रालय से समग्र पेंशन योजना के तहत प्रदेश के 33 लाख 45 हजार 231 हितग्राहियों के बैंक खातों में मार्च पेड अप्रैल की 200 करोड़ 71 लाख रुपये की पेंशन राशि सिंगल क्लिक से अंतरित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता के साथ

मुख्यमंत्री ने किया 33.45 लाख से अधिक हितग्राहियों को 200 करोड़ रुपये से अधिक पेंशन राशि का अंतरण

कार्य कर रही है। केन्द्र सरकार की ओर से सभी पात्र लाभार्थियों को प्रतिमाह पेंशन योजनाओं का लाभ मिल रहा है। यह हमारे लिए एक सामाजिक उत्तरदायित्व है। उन्होंने कहा कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के अंतर्गत दी जा रही यह पेंशन राशि उनके जीवनयापन में सहाय बनने के साथ-साथ उन्हें आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की प्रेरणा भी देती है।

इस अवसर पर उप-मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाहा, आयुक्त नि:शक्तजन कल्याण सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। प्रदेश के सभी कमिश्नर्स-कलेक्टर एवं पेंशन हितग्राहियों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए इस कार्यक्रम में सहभागिता की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हितग्राहियों को वचुंअली संबोधित करते हुए कहा कि सरकार का संकल्प है कि अंतिम पॉिक में खड़े समाज के हर व्यक्ति तक सहायता

समय पर, सम्मान के साथ और पारदर्शी तरीके से पहुंचे, जिससे कोई भी नागरिक अपने आपको असहाय महसूस न करे। सरकार हर परिस्थिति में आपके साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार जरूरतमंदों के हित में पूरी संवेदनशीलता और जवाबदेही के साथ कार्य कर रही है। हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि समाज के कमजोर वर्गों को नियमित रूप से आर्थिक सहायता मिले और कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति इस सहायता से वंचित न रहे। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने वर्तमान वित्त वर्ष 2026-27 के बजट में सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाओं के लिए 2 हजार 857 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से प्रदेश के लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है और उन्हें आर्थिक सुरक्षा का आधार भी मिल रहा है।

'हीरो हो', 10 बजे के बाद गमछा झाड़कर आए कर्मचारी को रीवा कलेक्टर ने करा दी परेड बाकी सब गर्दन झुकाए खड़े रहे



रीवा (नप्र)। 10.10 बजे ऑफिस पहुंचे कर्मचारियों को रीवा कलेक्टर ने ऑफिस के बाहर ही स्टेडअप मोड में खड़ा करा दिया। साथ ही सभी को जमकर खरीखोटी सुनाई है। कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी के तेवर को देखते हुए कर्मचारियों ने गर्दन झुका लिए थे। उन्होंने सभी को हिदायत दी है कि ऑफिस एक दम राइट टाइम आया करे। 10 बजे तक नहीं पहुंचे ऑफिस - दरअसल, रीवा कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी की छवि कड़क अधिकारी के रूप में है। वह हाल ही में बैतुल से रीवा आए हैं। बुधवार को सुबह 10 बजकर 10 मिनट पर वह ऑफिस का निरीक्षण करने पहुंचे। निरीक्षण के दौरान पाया कि अधिकांश दफतरो में कर्मचारी नहीं हैं। इसके बाद कलेक्टर ने ऑफिस के मेनगेट पर आकर खड़े हो गए। उन्होंने देखा कि कर्मचारियों की आवाजाही 10 बजे के बाद हो रही है। गेट पर ही कर्मचारियों को खड़ा करवा दिया - कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी ने देखा कि लेट आने वाले कर्मचारियों की संख्या दर्जनों में हैं। सबको उन्होंने एक लाइन खड़ा करवाकर हड़काना शुरू कर दिया। साथ ही जमकर फटकार लगाई।

आपने जम्मू-कश्मीर को बहुत कुछ दिया, आप सच में मामा हैं

उमर अब्दुल्ला ने शिवराज सिंह चौहान की शान में पढ़े कसीदे



भोपाल/श्रीनगर (नप्र)। जम्मू-कश्मीर की सियासत में मंगलवार का दिन एक नई इबारत लिख गया। श्रीनगर के एस्केआईसीसी में ग्रामीण विकास परियोजनाओं के शुभारंभ के दौरान मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान की जिस तरह तारीफ की, उसने राजनीतिक गलियारों में सबको चौंका दिया। उमर ने न केवल शिवराज को प्रदेश का 'सच्चा मित्र' बताया, बल्कि मध्य प्रदेश में उनके 'मामा' वाले टैग को भी पूरी तरह सही करार दिया।

...तो आप असली मामा हैं

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बेहद गर्मजोशी के साथ कहा कि मध्य प्रदेश के लोगों ने अगर शिवराज सिंह को मामा के रूप में स्वीकार किया है, तो वह गलत नहीं था। उमर ने कहा, जो आप जम्मू-कश्मीर के लिए कर रहे हैं, उसका अगर आधा भी एमपी के लिए किया होगा, तो ये मामा वाला टैग आप पर बिल्कुल जंचता है। हमने आपको इसी अंदाज में कबूल किया है।

363 बस्तियां तक पहुंचेंगे 'तरक़्की' - इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पीएमजीएसबाय आईवी के तहत 3550 करोड़ रुपये की लागत वाली 330 नई सड़क परियोजनाओं का शुभारंभ किया। इस फंड से 1600 किलोमीटर का नया सड़क जाल बिछेगा। इस सड़क का फायदा यह है कि इसके जरिए जम्मू-कश्मीर की 363 सबसे पिछड़ी और दूरस्थ बस्तियां मुख्यधारा से जुड़ेंगी। इसके अलावा आम जनता की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार तक पहुंच आसान होगी।

8000 करोड़ की सौगात

अब्दुल्ला ने ईमानदारी के साथ स्वीकार किया कि उन्हें फिहाल केंद्र से और धनराशि मांगने की जरूरत नहीं है। उन्होंने बताया कि पिछले एक साल में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत जम्मू-कश्मीर को 8000 करोड़ रुपये की परियोजनाएं मिल चुकी हैं। उमर ने आश्चर्य किया कि पहले स्वीकृत परियोजनाओं को धरातल पर उतारा जाएगा और काम से संतुष्ट होने के बाद ही वे दोबारा केंद्र के पास जाएंगे। पर्यटक यहां शहरों और कस्बों को देखने आते हैं, लेकिन हमारा दिल गांवों के लिए धड़कता है।

घटिया निर्माण पर बिफरे मंत्री सारंग, बोले-ये बड़ी लापरवाही

भोपाल के गौतमनगर से गुजर रहे थे सारंग, इंजीनियर को फटकार लगाई



भोपाल (नप्र)। भोपाल के गौतम नगर में चल रहे घटिया निर्माण कार्य पर मंत्री विश्वास सारंग बिफरे पड़े। उन्होंने प्रभारी उप यंत्री को मौके पर ही फटकार लगाई। कहा कि ये बड़ी लापरवाही है। क्या ऐसे काम होता है? दरअसल, चार्ज-58 स्थित गौतम नगर में सड़क किनारे कुछ फीट ऊपर तक बाउंड्रीवॉल उठाई जा रही है। बुधवार को मजदूर काम में लगे थे। इसी दौरान दोपहर 1.30 बजे मंत्री सारंग का वहां से गुजरना हुआ और मामला सामने आ गया।

अब अचानक दौरा करेंगे मंत्री

जानकारी के अनुसार, मंत्री ने नरेला विधानसभा में चल रहे अन्य कार्यों को लेकर भी सख्ती दिखाई है। निर्माण कार्य का वे खुद निरीक्षण करेंगे। उन्होंने कहा कि घटिया निर्माण करने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई। कोई हिलाई नहीं चलेगी।

कॉलेज चलो अभियान का दूसरा चरण प्रारंभ

उच्च शिक्षा विभाग ने जारी किए दिशा निर्देश, विद्यार्थियों की सुविधा के लिए हेल्पलाइन और टोल फ्री नंबर जारी

भोपाल (नप्र)। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा शैक्षणिक सत्र 2026-27 में विद्यार्थियों को महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए प्रेरित करने के लिए कॉलेज चलो अभियान का दूसरा चरण चलाया जा रहा है। विभाग द्वारा इस संबंध में दिशा निर्देश भी जारी कर दिए गए हैं। अभियान का मुख्य उद्देश्य अधिकतम पात्र विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा से जोड़ना तथा प्रवेश प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी एवं छत्र हिंसे बनाना है। विभाग द्वारा जारी किए गए निर्देश अनुसार सभी महाविद्यालयों में प्रवेश सहायता केंद्र स्थापित किए जाएंगे। कक्षा 12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों से संपर्क कर उनका पंजीयन सुनिश्चित किया जाएगा। एनसीसी/एनएसएस के सहयोग से ड्रॉप-आउट विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें पुनः शिक्षा से जोड़ने के प्रयास किए जाएंगे। इसके साथ ही विकासखंड स्तर पर प्रवेश मेले आयोजित किए जाएंगे तथा ई प्रवेश ऐप व पोर्टल के माध्यम से पंजीयन को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही, छात्राओं एवं कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी। विभाग की यह पहल अधिकाधिक विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

जिला स्तर पर मजबूत समन्वय, अब हर विद्यार्थी तक पहुंचेंगे प्रवेश सुविधा
शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए महाविद्यालयीन प्रवेश प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी एवं छत्र हिंसे बनाने के लिए जिला स्तरीय प्रवेश नोडल अधिकारियों को समन्वय संबंधी निर्देश जारी किए गए हैं। निर्देशों के तहत विद्यार्थियों को प्रत्येक चरण में समयबद्ध मार्गदर्शन, तकनीकी सहायता एवं आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही महाविद्यालयों के बीच बेहतर समन्वय से प्रवेश प्रक्रिया को सुचारु रूप से संवाहित किया जाएगा। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए हेल्प लाइन, कॉलेज चलो अभियान एवं सेंट्रल मॉनिटरिंग की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई है। इससे अधिकाधिक छात्र-छात्राओं के उच्च शिक्षा से जुड़ सकेंगे।

मसाला फसलों के उत्पादन में हम अत्तल, उद्यानिकी फसलों के रकबे का करें विस्तार : मुख्यमंत्री

उज्जैन में फूलों की खेती को मिलेगा बढ़ावा

सीएम पलोरी कल्चर सेंटर बनाएंगे, प्रदेश के 14 जिलों में मखाना उत्पादन बढ़ाने पर जोर

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि उद्यानिकी फसलें छोटी जगह से बड़ी कमाई करने का प्रभावी माध्यम है। प्रदेश के अधिकाधिक किसानों को इससे जोड़ा जाये। किसानों को सीजनल और उद्यानिकी फसलों के उत्पादन के लिए प्राकृतिक खाद का उपयोग कर जैविक खेती से जुड़ने के लिए प्रेरित करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार किसानों की आय बढ़ाने और कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासरत है। उद्यानिकी फसलों के माध्यम से किसानों की वास्तविक आय बढ़ाई जाए। किसानों की आय वृद्धि और उनके जीवन में खुशहाली लाने के लिये योजनाबद्ध तरीके से उद्यानिकी फसलों और इनके जोत रकबे का साल-दर-साल विस्तार किया जाए। उन्होंने कहा कि हमारी उद्यानिकी एवं मसाला फसलों की अंतर्राष्ट्रीय मांग बढ़ रही है। इसकी पूर्ति के लिए बाजार तलाशें, उद्यानिकी उत्पादों की भरपूर ब्रांडिंग करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे यहां औषधीय गुणों से भरपूर फसलों की खेती भी बहुतायत में की जाती है। इनकी बड़ी संभावनाएँ हैं। औषधि निर्माण के लिए जरूरी इन फसलों की इंटरनेशनल मार्केट में मांग अनुसार आपूर्ति के लिए पूरी सप्लाय चैन तैयार की जाये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में हर साल नये-नये आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं अस्पताल खोले जा रहे हैं। इनमें देशी/आयुर्वेदिक दवाइयों की आपूर्ति में प्रदेश की औषधीय फसलों एवं उप-उत्पादों का भरपूर उपयोग किया जाए। उन्होंने कहा कि मसाला फसलों के उत्पादन में हम पूरे देश में पहले स्थान पर हैं। यह उपलब्धि हमें इस क्षेत्र में और भी बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मंत्रालय में उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग की योजनाओं और गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में विभागीय संचालित योजनाओं की प्रगति और हितप्राथम्यकों को लाभ प्रदाय पर गहन चर्चा की गई।

बैठक में बताया गया कि सिंहस्थ - 2028 के महानंज उज्जैन में फूलों की खेती को प्रोत्साहन एवं विस्तार किया जा रहा है। इसके लिए उज्जैन में सेंटर फॉर एक्सपोर्ट्स पलोरीकल्चर की स्थापना की जा रही है।



सेंटर स्थापना के लिए उज्जैन शहर के पास एक गांव में 19 एकड़ जमीन चिह्नित कर ली गई है। केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजकर समर्पित समन्वय भी किया जा रहा है।

जून में भोपाल में होगा आम महोत्सव

बैठक में बताया गया कि प्रदेश में इसी वर्ष जून माह में भोपाल में आम महोत्सव, जुलाई में खरगोन में मिर्च महोत्सव, सितम्बर में बुरहानपुर में केला महोत्सव, अक्टूबर में इंदौर में सब्जी महोत्सव, नवम्बर में ग्वालियर में अमरूद महोत्सव मनाया जाएगा। साथ ही दिसंबर में ग्वालियर में मधुमक्खी पालन व्यवसाय के प्रोत्साहन एवं जागरूकता के लिए एक कार्यशाला/सेमिनार भी आयोजित की जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभागीय अधिकारियों को संतारा महोत्सव भी आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आम महोत्सव के दौरान प्रदेश के सभी 10 संभागों में आम के 10 बाग लगाने के प्रयास किए जाएं। केला महोत्सव में केले के तने से रेशे बनाने वाले उद्यमियों/उद्योगपतियों को जोड़ा जाये। सब्जी महोत्सव के दौरान नागरिकों को अपने घरों में किचन गार्डन लगाने के लिए जागरूक एवं प्रोत्साहित किया जाए।

दुनिया में मिलेगी मप्र की उद्यानिकी फसलों को पहचान

बैठक में बताया गया कि वर्ष 2030 तक उद्यानिकी क्षेत्र का रकबा 30 लाख हेक्टेयर तक पहुंच जाएगा। बागवानी फसलों के उत्पादन और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश में हॉर्टिकल्चर प्रमोशन एजेंसी की स्थापना करने की कार्यवाही जारी है। मध्यप्रदेश के उद्यानिकी उत्पादों को दुनिया में पहचाना जाएगा। इसके लिए जी आई टैग दिलवाने की प्रक्रिया जारी है। विशेष रूप से जबलपुरी मटर, गुना का कुंभराज धनिया, बुरहानपुर का केला, रतलाम का रियावन लहसुन, खरगोन की मिर्च, इंदौर का मालवी आलू, बरमन भट्टा, छतरपुर का पान जैसे उद्यानिकी उत्पादों को जल्दी ही विशिष्ट भौगोलिक पहचान मिल जाएगी।

गर्मी की छुट्टियां पड़ी भारी, खदान में डूबे दो मासूम

भाई को बचाने गई बहन, दोनों की डूबने से मौत, परवलिा की घटना

भोपाल (नप्र)। परवलिा थाना क्षेत्र के दौलतपुर गांव के पास मंगलवार दोपहर दर्दनाक हादसे में 17 वर्षीय युवराज और 15 वर्षीय मालती की खदान में डूबने से मौत हो गई। दोनों रिश्ते में भाई-बहन (कजिन) थे। घटना के बाद पूरे गांव में शोक का माहौल है।

पुलिस के अनुसार, मूलतः विदिशा जिले के कुआखेड़ा गांव निवासी युवराज गर्मी की छुट्टियों में एक दिन पहले ही अपनी बुआ के घर दौलतपुर आया था। मंगलवार को वह अपनी बुआ की बेटी मालती के साथ घर से कुछ दूरी पर स्थित एक गहरी खदाननुमा तालाब के पास खेल रहा था। इसी दौरान कीचड़ में पैर फिसलने से युवराज सीधे गहरे पानी में जा गिरा और डूबने लगा।

बचाने कूदी बहन और वह भी डूबी- भाई को डूबता देख पास खड़ी मालती बिना देर किए उसे बचाने के लिए पानी में कूद गई। हालांकि उसे तैरना नहीं आता था और खदान में पानी काफी गहरा था, जिससे वह खुद भी संतुलन नहीं बना सकी और डूब गई। पुलिस ने मार्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि जिस खदान में हादसा हुआ, वह असमतल और जगह-जगह गहरी है, जहां पानी का स्तर अचानक बढ़ जाता है। युवराज को तैरना नहीं आता था, जिससे वह गहराई का अंदाजा नहीं लगा सका।

ग्वालियर में चोरी करने आए युवक का हाथ खिड़की में फंसा

पूरी रात वहीं पर खड़ा रहा, सुबह ले गई पुलिस



ग्वालियर (नप्र)। मध्य प्रदेश के ग्वालियर से एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक सूने घर में चोरी करने के लिए चोर घर में घुसा था। चोरी के प्रयास के दौरान चोर का हाथ खिड़की के जाल में फंस गया। वहीं, रात भर चोर हाथ निकालने की कोशिश करता रहा लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। ऐसे में चोर रात भर वहीं पर खड़ा रहा।

पूरी रात हाथ निकालने की कोशिश करता रहा- वहीं, चोर रात भर अपना हाथ निकालने की कोशिश करता रहा, लेकिन जब बात नहीं बनी तो रात भर चोर वहीं पर खड़ा रहा। सुबह मकान मालिक के आने पर चोर ने पूरी बात बताई। इसके बाद मकान मालिक ने पुलिस को बुलाया और चोर को ग्वालियर पुलिस के हवाले कर दिया।

ग्वालियर के दीनदयाल नगर का है मामला

यह पूरा घटनाक्रम ग्वालियर के दीनदयाल नगर में राकेश यादव का मकान बन रहा है। रोज की तरह 26 अप्रैल की रात को भी राकेश यादव अपने निर्माणधीन मकान में ताला लगाकर चले गए। 26 अप्रैल की रात को ही एक चोर मकान में चोरी करने की नीयत से घुस गया। जब यह चोर खिड़की के जाल में हाथ डालकर दरवाजे की कड़ी खोलने की कोशिश करने लगा, तभी उसे पहसा हुआ कि उसका हाथ खिड़की के जाल में फंस गया है।

कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग कर समयबद्ध क्रियान्वयन करें सुनिश्चित: श्री शुक्ल



भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में रीवा शहर में संचालित जल प्रदाय योजना एवं सीवरेज सिस्टम से संबंधित कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने कार्यों की प्रगति, गुणवत्ता, समय-सीमा तथा वित्तीय प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सभी निर्माण कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं, ताकि आम नागरिकों को समय पर सुविधाओं का लाभ मिल सके। बैठक में अपर मुख्य सचिव नगरीय विकास एवं आवास श्री संजय दुबे, आयुक्त श्री संकेत भोडवे सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जल प्रदाय व्यवस्था के शेष सभी कार्य, विशेषकर ओवरहेड वाटर टैंक के निर्माण एवं जल वितरण नेटवर्क का विस्तार, आगामी वर्षा ऋतु से पहले हर स्थिति में पूर्ण करने के निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल से मप्र स्टेट सिविल सप्लाइज कॉर्पोरेशन लिमिटेड के उपाध्यक्ष श्री कांकर ने की सौजन्य भेंट

खिड़की में फंस गया हाथ

चोर ने अपने हाथ को जाल से बाहर निकालने की कड़ी मशकत की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिल सकी। हालत यह हो गए कि चोर का हाथ चोटिल हो गया लेकिन उसका हाथ खिड़की के जाल से बाहर नहीं निकल सका। मजबूरी में चोर को खिड़की पर हाथ फंसा कर खड़े रहना पड़ गया। रात भर चोर वहीं खड़ा रहा। सुबह जब मकान मालिक राकेश यादव अपने मकान पर पहुंचे और उन्होंने ताला खोला तो देखा कि चोर वहां खड़ा हुआ था।

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से मध्यप्रदेश स्टेट सिविल सप्लाइज कॉर्पोरेशन लिमिटेड के नवनि्युक्त उपाध्यक्ष श्री संजीव कांकर ने मंत्रालय में सौजन्य भेंट की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने नवीन दायित्व के लिए उपाध्यक्ष श्री कांकर को शुभकामनाएं दीं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विद्य विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. सिंह पटेल को दी शुभकामनाएं भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से वल्लभ भवन, भोपाल में 'विद्या विकास प्राधिकरण' के नवनि्युक्त उपाध्यक्ष डॉ. अजय सिंह पटेल ने सौजन्य भेंट की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने डॉ. पटेल को नवीन दायित्व के आभिनंदन बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने डॉ. पटेल के उच्चल कार्यकाल की कामना करते हुए विश्वास व्यक्त किया गया कि डॉ. पटेल अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

संपादकीय

गुजरात: 'आप' को झटका

यू भाजपा का अपने गढ़ गुजरात में चुनाव जीतना कोई बड़ी खबर नहीं है, लेकिन राज्य में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों के मद्देनजर स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा की बंपर जीत इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वहां भाजपा का कोई विकल्प नहीं है। विपक्षी कांग्रेस की हालत तो पतली है ही, हाल के वर्षों में प्रदेश में तीसरे विकल्प के रूप में उभरी आप (आम आदमी पार्टी) का भी इस चुनाव में लगभग सफाया हो जाना न सिर्फ चौंकाने वाला है, बल्कि इस बात का साफ इशारा है कि दिल्ली में पार्टी के बिखरने की आंच अब उन राज्यों तक भी पहुंच गई है, जहां आप को एक सत्ताधारी के रूप में देखा जा रहा था। गुजरात में हाल में हुए स्थानीय निकायों के चुनाव में भाजपा ने राज्य के सभी 15 नगर निगमों में अपनी जीत का परचम फहरा दिया है। यानी प्रदेश के शहरों में उसका जनसमर्थन अबाधित है। इनमें से भी मेहसाणा, मोरबी, नाडियाड और वापी ऐसे नगर निगम हैं, जहां पहली बार चुनाव हुए थे। गौरतलब है कि हाल में राज्य के 15 नगर निगम, 84 नगरपालिका, 34 जिला पंचायत और 260 तालुका पंचायत के लिए 26 अप्रैल को वोटिंग हुई थी। इनमें 4 करोड़ 18 लाख से ज्यादा मतदाताओं ने वोट डाले थे। नतीजों से साफ है कि भाजपा वहां मतदाताओं के दिल से नहीं उतरी है। पिछले चुनाव में बीजेपी ने 8470 में से 6236 सीटें जीती थीं। इस चुनाव में कुछ बड़े नाम भी खेत रहे हैं। जैसे कि मशहूर क्रिकेटर रवींद्र जडेजा की बहन नयनाबा कांग्रेस की टिकट पर राजकोट से हार गई हैं। सूरत नगर निगम की 120 सीटों में से भाजपा ने 115 सीटें जीती हैं। वहीं आप 4 सीटों पर सिमट गई। जबकि 2021 के स्थानीय निकाय चुनावों में आप ने 27 सीटें जीती थीं। इन चुनावों का एक और महत्वपूर्ण संकेत असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम की घटती लोकप्रियता है। भुज नगर पंचायत में उसके 3 उम्मीदवार जीते हैं। पिछले स्थानीय निकाय चुनाव में उसके 7 उम्मीदवार जीते थे। इस चुनाव में कुछ दिलचस्प नजारे भी देखने को मिले। मसलन चूड़ियां बेचने वाली संशोबेन कांगशिया बहुचर्चाजी नगरपालिका के वार्ड-4 से पार्षद बनीं तो भरुक के पालेज तालुका पंचायत सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार को सिर्फ 1 वोट से जीत मिली। इसी तरह भेसन सीट पर बीजेपी के पूर्व विधायक भूपतभाई भयानी की हार हुई। उन्हें आम आदमी पार्टी के दिनेश रूपारेलिया ने 1700 वोटों से हराया। निरचय ही इन नतीजों का राज्य में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों की दृष्टि से विशेष महत्व है। गुजरात में भाजपा से तीन दशकों से सत्ता पर काबिज है। उसने इसे हिंदुत्व की प्रयोगशाला बनाया हुआ है। बीच में आए कुछ राजनीतिक उतार-चढ़ावों को अलग रखें तो प्रदेश में भाजपा की जड़ें बहुत गहरी जमा चुकी हैं। दरअसल गुजरात हिंदुत्व और आर्थिक विकास का ऐसा मॉडल बन चुका है, जिसे भाजपा अन्य राज्यों में भी दोहराने की कोशिश करती आई है। इस चुनाव में सबसे बड़ा झटका आप को लगा है। क्योंकि दिल्ली और पंजाब के बाद गुजरात ऐसा राज्य रहा है, जहां आप तीसरी ताकत के रूप में उभरने की कोशिश कर रही थी। लेकिन हाल में पार्टी में जो अंतर्कलह मची है, गुजरात भी उसके अड़ूता नहीं रहा है। आप के बड़े नेता पार्टी छोड़कर भाजपा में जा रहे हैं। इससे आप का जनाधार सिकुड़ता जा रहा है। वह अपने रास्ते और उद्देश्य से भटक चुकी हैं। आप के सुप्रिोमो भले ही बापू की समाधि पर कितने ही सत्याग्रह क्यों न कर लें, पार्टी को अब फिर से खड़ा करना आसान नहीं है।

नजरिया

नूपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।



सड़कों जीवन को जोड़ने के लिए बनाई जाती हैं, उसे समाप्त करने के लिए नहीं। लेकिन भारत में आज हालात कुछ और ही कहानी कहते हैं। खासकर राजमार्गों और एक्सप्रेसवे पर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं ने इन जीवनदायी रास्तों को मानो 'मौत के गलियारों' में बदल दिया है। यह चिंताजनक स्थिति केवल चालकों की लापरवाही का परिणाम नहीं है, बल्कि यह हमारी अव्यवस्थित योजना, कमजोर कानून-प्रवर्तन और प्रशासनिक जवाबदेही की कमी का सम्मिलित दुष्परिणाम है। हाल ही में न्यायपालिका द्वारा जताई गई चिंता और दिए गए निर्देश इस संकेत की गंभीरता को स्पष्ट करते हैं, लेकिन जब तक व्यवस्था की गहराई में मौजूद खामियों को दूर नहीं किया जाएगा, तब तक ये प्रयास केवल अस्थायी राहत ही बनकर रह जायेंगे।

भारत में सड़क नेटवर्क का तेजी से विस्तार, विशेषकर राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे का निर्माण, विकास और प्रगति का प्रतीक माना जाता है। बेहतर कनेक्टिविटी, कम यात्रा समय और व्यापारिक सुगमता ने अर्थव्यवस्था को गति दी है। लेकिन इस विकास की एक बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ रही है। आंकड़े बताते हैं कि देश की कुल सड़कों में राष्ट्रीय राजमार्गों की हिस्सेदारी बहुत कम है, फिर भी सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों का बड़ा हिस्सा इन्हीं पर होता है। यह स्थिति इस बात का संकेत है कि समस्या केवल यातायात की संख्या नहीं, बल्कि सड़क निर्माण की गुणवत्ता, डिजाइन और प्रबंधन से जुड़ी है। राजमार्गों पर दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण ट्रैफिक नियमों का पालन न करना है। तेज गति यानी ओवरस्पीडिंग आज भी सबसे बड़ी वजह बनी हुई है। जिन सड़कों को तेज और सुगम यात्रा के लिए बनाया जाता है, वहाँ गति नियंत्रण के पर्याप्त साधन नहीं होते। इसके साथ ही लापरवाह ड्राइविंग, जैसे लेन अनुशासन की कमी, अचानक ओवरटेक करना और सुरक्षा नियमों की अनदेखी दुर्घटनाओं के खतरे को और बढ़ा देती है। जब नियमों का पालन सख्ती से नहीं होता, तो लोग उन्हें हल्के में लेने लगते हैं और यही लापरवाही जानलेवा साबित होती है।

एक बड़ी समस्या है राजमार्गों के किनारे अवैध पार्किंग और अतिक्रमण। अक्सर ट्रक और बसें सड़क के किनारे या कई बार मुख्य मार्ग पर ही खड़ी कर दी जाती हैं, खासकर रात के समय। तेज रफ्तार से चल रहे वाहनों के लिए यह अचानक सामने आने वाली बाधा घातक साबित होती है। इसके अलावा, सड़क किनारे ढाबे, दुकानें और अस्थायी बाजार भी अतिक्रमण कर लेते हैं, जिससे पैदल

सड़कों को मौत नहीं, जीवन का रास्ता बनाएं

जवाबदेही की कमी भी इस समस्या को और गंभीर बनाती है। सड़क प्रबंधन में कई एजेंसियाँ शामिल होती हैं- राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, राज्य सरकारें, ट्रैफिक पुलिस और स्थानीय प्रशासन। लेकिन इनके बीच समन्वय की कमी के कारण काम सही ढंग से नहीं हो पाता। जब कोई दुर्घटना होती है, तो जिम्मेदारी तय करना मुश्किल हो जाता है और अक्सर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। इस बिखरी हुई व्यवस्था के कारण लापरवाही बनी रहती है और सुधार की गति धीमी पड़ जाती है। न्यायपालिका ने इस स्थिति को सुधारने के लिए कई निर्देश दिए हैं, जैसे अतिक्रमण हटाना, पार्किंग को नियंत्रित करना, आधुनिक निगरानी प्रणाली लगाना और विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल सुनिश्चित करना।

लोगों की आवाजाही बढ़ जाती है और यातायात बाधित होता है। ये सभी स्थितियाँ मिलकर सड़कों को असुरक्षित और अनिश्चित बना देती हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमियाँ भी दुर्घटनाओं को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। कई जगहों पर सड़कें ठीक तरह से डिजाइन नहीं की गई होती, संकेतक (साइन बोर्ड) पर्याप्त नहीं होते, रोशनी की कमी रहती है और जरूरी जगहों पर सुरक्षा बैरियर नहीं लगाए जाते। कई बार राजमार्ग घनी आबादी वाले क्षेत्रों से गुजरते हैं, लेकिन वहां पैदल पारथ, सर्विस लेन या गति नियंत्रित



करने के उपाय नहीं होते। इससे यह स्पष्ट होता है कि सड़क निर्माण में सुरक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती, बल्कि केवल गति और विस्तार पर जोर दिया जाता है।

जवाबदेही की कमी भी इस समस्या को और गंभीर बनाती है। सड़क प्रबंधन में कई एजेंसियाँ शामिल होती हैं- राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, राज्य सरकारें, ट्रैफिक पुलिस और स्थानीय प्रशासन। लेकिन इनके बीच समन्वय की कमी के कारण काम सही ढंग से नहीं हो पाता। जब कोई दुर्घटना होती है, तो जिम्मेदारी तय करना मुश्किल हो जाता है और अक्सर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। इस बिखरी हुई व्यवस्था के कारण लापरवाही बनी रहती है और सुधार की गति धीमी पड़ जाती है। न्यायपालिका ने इस स्थिति को सुधारने के लिए कई निर्देश दिए हैं, जैसे अतिक्रमण हटाना, पार्किंग को नियंत्रित करना, आधुनिक निगरानी प्रणाली लगाना और

विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल सुनिश्चित करना। ये कदम निश्चित रूप से जरूरी हैं, लेकिन इनकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन्हें कितनी गंभीरता से लागू किया जाता है। हमारे देश में अक्सर अच्छे नियम बनाए जाते हैं, लेकिन उनका पालन सही ढंग से नहीं होता। इसलिए असली चुनौती नीतियाँ बनाना नहीं, बल्कि उन्हें जमीन पर उतारना है।

तकनीक भी सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम, स्पीड कैमरा, नंबर प्लेट पहचान प्रणाली और रियल-टाइम मॉनिटरिंग जैसे उपाय नियमों के पालन को सुनिश्चित कर सकते हैं। डेटा के आधार पर दुर्घटना-प्रवण क्षेत्रों की पहचान कर वहाँ विशेष कदम उठाए जा सकते हैं। लेकिन तकनीक तभी प्रभावी होगी, जब उसके साथ मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था और जवाबदेही भी जुड़ी हो। सड़क सुरक्षा में आम लोगों

की भूमिका भी बेहद अहम है। अक्सर इसे केवल सरकार की जिम्मेदारी माना जाता है, लेकिन यह हर नागरिक का कर्तव्य भी है। वाहन चलते समय सीट बेल्ट लगाना, मोबाइल फोन का उपयोग न करना, लेन का पालन करना और गति सीमा का सम्मान करना जैसे छोटे-छोटे कदम भी कई जिंदगियाँ बचा सकते हैं। जागरूकता अभियान और सख्त दंड व्यवस्था लोगों में जिम्मेदारी की भावना विकसित कर सकते हैं।

हालाँकि यह भी सच है कि केवल व्यक्तिगत सावधानी से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। यदि सड़कें ही खराब हों, संकेतक न हों या अचानक अवरोध सामने आ जाए, तो सावधान चालक भी दुर्घटना का शिकार हो सकता है। इसलिए सड़क सुरक्षा को एक साझा जिम्मेदारी के रूप में देखा होगा, जिसमें सरकार और नागरिक दोनों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण हो। एक और

क्या बढ़ती गर्मी से लड़ने को तैयार है भारत?

तापमान और बढ़ जाता है।

बढ़ती गर्मी के प्रभाव अब हर क्षेत्र में साफ दिखाई देने लगे हैं। स्वास्थ्य के लिहाज से यह सबसे खतरनाक साबित हो रही है। हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन, चक्कर आना, थकान और हृदय से जुड़ी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। विशेष रूप से बुजुर्ग, बच्चे और मजदूर वर्ग इस गर्मी के सबसे बड़े शिकार बन रहे हैं। कई मामलों में अत्यधिक गर्मी जानलेवा भी साबित हो रही है।

कृषि क्षेत्र पर इसका असर और भी गंभीर है। तेज गर्मी और पानी की कमी के कारण फसलें समय से पहले सूख जाती हैं। गेहूँ, चावल और अन्य प्रमुख फसलों की पैदावार में अड़क



सौधा असर पड़ रहा है। किसान पहले ही प्राकृतिक आपदाओं से जूझ रहा है, और अब बढ़ती गर्मी उसकी मुश्किलों को और बढ़ा रही है। इससे न केवल किसानों की आय प्रभावित होती है, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाती है।

जल संकट भी इस समस्या का एक बड़ा पहलू बन चुका है। गर्मी बढ़ने से नदियों, तालाबों और झीलों का जल स्तर घटने लगता है। भूजल तेजी से नीचे जा रहा है, जिससे पाने के पानी की समस्या गंभीर होती जा रही है। कई शहरों और गांवों में पानी के लिए लंबी कतारें लगाना अब आम बात हो गई है। यह स्थिति आने वाले समय में और भी विकट हो सकती है यदि समय रहते कदम नहीं उठाए गए। आर्थिक दृष्टि से भी गर्मी का प्रभाव कम नहीं है। अत्यधिक गर्मी के कारणकाम के घंटे घट जाते हैं, खासकर निर्माण कार्य, खेती और अन्य बाहरी कामों में लगे लोगों के लिए। इससे उत्पादन कम होता है और आय पर असर पड़ता है। उद्योगों में बिजली की मांग बढ़ने से ऊर्जा संकट भी पैदा होता है, जिससे लागत बढ़ती है और आर्थिक दबाव बढ़ता है। यह सवाल उठता है कि क्या इस बढ़ती गर्मी को रोकना जा सकता है? वास्तविकतायह है कि यह एक वैश्विक समस्या है और इसे तुरंत रोकना संभव नहीं है। लेकिन इसके प्रभाव को कम करना और खुद को सुरक्षित रखना पूरी तरह हमारे हाथ में

है। यही वह क्षेत्र है जहां व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

व्यक्तिगत स्तर पर कुछ सावधानियाँ बहुत कारगर साबित हो सकती हैं। दिन के सबसे गर्म समय, यानी दोपहर 12 से 3 बजे के बीच बाहर निकलने से बचना चाहिए। यदि बाहर जाना जरूरी हो, तो सिर को ढंकरकर और हल्के, ढीले कपड़े पहनकर ही निकलें। पानी, छाछ, नींबू पानी और अन्य तरल पदार्थों का सेवन अधिक करें ताकि शरीर में पानी की कमी न हो। शरीर को ठंडा रखने के लिए समय-समय पर विश्राम करना भी जरूरी है। घर के स्तर पर भी कुछ छोटे बदलाव बड़ा असर डाल सकते हैं। घरों में पौधे लगाना, छतों पर हरियाली बढ़ाना और प्राकृतिक वेंटिलेशन का उपयोग करना तापमान को कम करने में मदद करता है। दिन के समय खिड़कियों को बंद रखकर और रात में खोलकर ठंडी हवा का लाभ लिया जा सकता है। पारंपरिक तरीकों, जैसे मिट्टी के घड़े का पानी और छायादार स्थानों का उपयोग भी आज के समय में प्रासंगिक हो गया है।

समाज और सरकार की भूमिका इस समस्या से निपटने में सबसे महत्वपूर्ण है। शहरों में अधिक पेड़ लगाना, पार्क और ग्रीन जोन विकसित करना, और जल संरक्षण के उपायों को बढ़ावा देना जरूरी है। कई राज्यों में 'हीट एक्शन प्लान' लागू किए जा रहे हैं, जो लोगों को जागरूक करने और आपातकालीन सेवाओं को तैयार रखने में मदद करते हैं। इन योजनाओं को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

दीर्घकालिक समाधान की बात करें तो हमें अपने विकास के मॉडल पर पुनर्विचारकरना होगा। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा देना, प्रदूषण को कम करना और टिकाऊ शहरी विकास की दिशा में कदम उठाना अनिवार्य है। यदि हम आज इन उपायों को अपनाते हैं, तो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित कर सकते हैं। बढ़ती गर्मी केवल एक मौसमी बदलाव नहीं, बल्कि एक चेतावनी है—प्रकृति की ओर से दी गई एक गंभीर चेतावनी। यदि हम इसे नजरअंदाज करते हैं, तो इसके परिणाम और भी भयावह हो सकते हैं। लेकिन यदि हम समय रहते जागरूक होकर सही कदम उठाते हैं, तो इस संकट को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। अधिकार, यह समझना होगा कि हम प्रकृति से अलग नहीं हैं, बल्कि उसका ही हिस्सा हैं। जब प्रकृति असंतुलित होती है, तो उसका असर सीधे हमारे जीवन पर पड़ता है। इसलिए जरूरी है कि हम अपने व्यवहार, अपनी नीतियों और अपनी प्राथमिकताओं में बदलाव लाएं। तभी हम इस तपती धरती पर जीवन की ठंडक को बनाए रख सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक संतुलित और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

मौसम

जयदेव राठी

लेखक अधिका हैं।



देश और दुनिया इस समय एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जहां गर्मी अब केवल मौसम का हिस्सा नहीं रही, बल्कि यह एक गहरीता हुआ संकट बन चुकी है। अप्रैल से ही तापमान का 40 से 43 डिग्री के आसपास पहुंच जाना, मई-जून में 45 डिग्री के पार जाना और रातों में भी गर्मी का कम न होना—ये संकेत साफ बताते हैं कि जलवायु का संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। आम आदमी के लिए यह केवल असुविधा नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, रोजगार और जीवन के हर पहलू पर असर डालने वाली गंभीर चुनौती बन गई है। बढ़ती गर्मी के पीछे सबसे बड़ा कारण जलवायु परिवर्तन है। पिछले कुछ दशकों में औद्योगिक विकास, बढ़ते वाहनों और ऊर्जा की खपत ने वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को बहुत बढ़ा दिया है। ये गैसें पृथ्वी के चारों ओर एक परत बना देती हैं, जो सूर्य की गर्मी को बाहर जाने से रोकती है। परिणामस्वरूप पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि पहले जो गर्मी सामान्य मानी जाती थी, अब वहअसहनीय हो गई है।

इसके साथ ही तेजी से हो रहा शहरीकरण भी इस समस्या को बढ़ा रहा है। शहरों में कंक्रीट के भवन, अब सड़कें भी सिमेंट से बनने लगी हैं और हरियाली की कमी मिलकर 'हीट आइलैंड प्रभाव' पैदा करते हैं। इसका मतलब है कि शहरों का तापमान आसपास के ग्रामीण इलाकों से ज्यादा हो जाता है। जहां पहले पेड़-पौधे और मिट्टी प्राकृतिक रूप से तापमान को नियंत्रित करते थे, वहीं अब कंक्रीट और लोहे की संरचनाएं गर्मी को कसकर धकेल देती हैं। यही वजह है कि शहरों में रहने वाले लोग अधिक गर्मी का सामना कर रहे हैं। प्राकृतिक असंतुलन भी एक बड़ा कारण है। पहले मौसम चक्र अपेक्षाकृत संतुलित था—समय पर बारिश, ठंडी हवाएं और मौसमी बदलाव एक चक्र में चलते थे। लेकिन अब यह लय टूट चुकी है। पश्चिमी विश्वो भी कमजोर पड़ रहे हैं, मानसून अनियमित हो रहा है और कई बार लंबे समय तक बादल नहीं बनते। इससे जमीन सूखजाती है और जब मिट्टी में नमी कम होती है, तो वह अधिक गर्मी को अवशोषित करती है, जिससे

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, फ्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी

कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोक्किल

संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी

वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला

प्रबंध संपादक
अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsavere news@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध नहीं है।

व्यंग्य

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।



हमारे गांव में एक चौधरी थी जे,बिल्कुल विश्व बिरादरी के ठसकी चौधरी की तरह। महत्वाकांक्षी,नहीं महत्वोन्मादी, उच्छ्रुता व उर्दंडता के पर्याय। किसी की न सुनने वाले, बस सबको अपने मन की सुनाने वाले। आसपास के दस-बीस गांव में उनका बड़ा भारी रसूख था।अच्छेखासे पैसे बाले थे सो हवेली में नौकर-चाकर भी अपने-अपने काम पर लगे हुए थे।उन्हें कोई काम नहीं था।सुल्ह उठाना, दरबार लगाना, अपनी हकना और मनचाही इधर उधर फेंकना। ऐसे ही दो चार शौक और थे जिनमें कुछ वर्षाणियों हैं शेष अवरणणियों। बड़े लोगों के कौन मुटु लगे? दूसरों के पेट में

पांव देने की उनकी पुरानी आदत थी जो अब जा जाहिर हो चुकी थी।जब भी एक दो दिन में किसी के कपड़े फटे हुए या पांव डालने लायक नहीं दिखते तो खुद ही किसी कमजोर जान को पकड़कर उसके कपड़े फाड़ देते और अपनी टांग डालकर बैठ जाते।फिर कहते -छेड़दिया साले! जा भाग के दिखा। कमजोर आदमी डर के मारे फिन्चो बांधे वहीं खड़ा रहता। नकली वोट डालने के इच्छुक पकड़े गये फर्जी मतदाता की तरह। भागता भी कैसे? टागे तो भागने को खुली हों? फिर वे उस पर शोले के गम्बर सिंह की तरह खुलकर हंसते, जमकर ठी-ठा करते, आसपास खड़े लोगों को देखकर-दिखाकर, मूछें पर ताव देते।डर के मारे गुरीब आदमी की मदद को कोई नहीं आता। सब यही सोचते कि कौन चौधरी जी

से पंगा मोल ले ? सो उनकी चौधराहट की धाक अभी तक बनी हुई थी।

अब चौधरी जी तो विखंडित मानसिकता के मरीज थे सो रोज खुजली उठती ही थी।जब मन होता बाल सुलभ मुस्कान के साथ बच्चों की तरह बिना सोचे समझे फिर नई शरारत को उतारू हों जाते। इस बार भी एक कमजोर से दिखने वाले को अचानक पकड़कर यही खेल दोहराने लगे।साहद किसी ने धार पर धर दिया था या चने के झाड़ पर चढ़ा दिया था। पर चौधरी जी को यह पता नहीं था कि यह मरिखल सा दिखने वाला डेढ़ पसली का शख्स जुबो कराटे व मार्शल आर्ट का चैंपियन है। चौधरी जी ने जैसे ही उठका लगाकर गांव वालों के सामने अपनी वीरता का प्रदर्शन करना चाहा, सामने वाले ने भी मुझे बांधकर सीधे

चौधरी की पसली में दे मारी एक बार तो चौधरी साहब को लगा कि फेफड़े फट गए।पर किसी के सामने रो भी नहीं सकते।दरद के मारे उचके तो उचके भी ना पाए क्योंकि पांव उसके पेट की मोहरी में फंसा था।

अब तो चौधरी जी बार-बार उचकें पर निकल न पाए और जब भी उचकें तभी वह उनकी पसली में दाएं-बाएं किसी भी तरफ से जमकर उसकी चोट सीधे उनके पुच्छें पर पड़ी।और कहीं पड़ती तो पता नहीं क्या होता? सारे गांव ने देखा कि चौधरी जी आँधे मुंह गिरते-गिरते बचे।अगर बाकई गिर जाते तो दो चार दांत अवश्य टूटते,हो वें प्याज का शबूत पियें, प्याज की सब्जी बनाये नहीं तो पकौड़े बनाए, खाए और खिलाए। मरे आदेश का तुरंत पालन किया

चौधरी जी बड़े परेशान। उन्होंने लाख जतन किए पर छूट न पाए। कंबल समझकर नदी में लूटने कूटे पर वही रीखलिनकरा, वो छोड़ना भी चाहें तो रीख न छोड़े। अब झक मारकर उन्होंने किनारे खड़े गांव वालों की ओर कारत दृष्टि से देखा।गांव वाले भी समझ गए कि चौधरी जी गलत उलझ गए इसलिए बीच बचाव करने की गुहार लगा रहे हैं। गांव के दो-तीन सयानों ने एक दूसरे को इशारा किया कि चौधरी जी अपने गांव के हैं सो अपनी ही इज्जत जुड़ी है। सबने मिलकर जैसे तैसे बाल बनाई और दोनों को अलग-अलग किया।लेकिन उस दिन जो हुआ तब से चौधरी ने शर्मिंदगी के मारे मुंह न उठाया, चौधराहट तो उसी दिन खत्म हो गई थी।अब वो दिन है कि चौधरी किसी ने हवेली के बाहर न देखा।

प्याज हो साथ फिर ऐसी की क्या बात

कटाक्ष

अंशु प्रधान

लेखक व्यंग्यकार हैं।



कवार अंधेर नगरी के महाराजा गर्मी के मौसम में नगर भ्रमण पर निकले। महाराज को देखते ही लोग चिखलें लगे, 'महाराज बड़ी गर्मी है, हम तो गर्मी से मरे जा रहे हैं। कृपा कर कोई व्यवस्था कीजिये, नहीं तो कम से कम सरकार की ओर से कार्यालयों स्कूलों आदि में ऐसी ही लगवा दीजिए।' महाराज ने आश्चर्य से प्रजा को देखा और बोले, 'ऐसी ! आखिर ऐसी की जरूरत ही क्या है?' बड़ी हिम्मत करके भीड़ में से एक आदमी बोला, 'महाराज बहुत गर्मी है कार्यालयों में काम करना मुश्किल है। कृपा करें।' महाराज को अब थोड़ा गुस्सा आया,उन्होंने अपने क्लृते की आस्तीनों को ऊपर चढ़ाया और हाथ को यूँ झटका दिया मानों कि आस्तीन के साँपों को ही हो नीचे गिराया फिर वे थोड़ा सा मुस्काराए और बोले, 'कहाँ है गर्मी ? मैं तो कार तक में ऐसी नहीं रखता और तुम झोपड़ों में ऐसी लगवाने की बात करते हो। शर्म आनी चाहिए तुम्हें।' मैं तो बस एक प्याज की गांठ हर समय अपनी जेब में रखता हूँ और मस्त रहता हूँ। जाओ तुम लोग भी एक प्याज हर समय अपनी जेब में रखो और आनंद मनाओ।

अब तो लोगों के मुँह देखने लायक थे मगर कोई कुछ बोले इसके पहले ही महाराज फिर बोल पड़े, 'मंत्री ! पूरे नगर में मुनादी करवा दी जाए कि आज से सभी लोग जेब में प्याज लेकर घर से निकलें नगर के सारे ऐसी बंद कर दिए जाएँ जो ऐसा न करेगा उसे फाँसी की सजा दी जाएगी।'

अब चौकि राजा का आदेश था इसलिए नगर के सारे ऐसी बंद करवा दिए गए। नगर में प्याज की आवक बढ़ा दी गयी। जो प्याज तीस-चालीस रुपये बिकता था अचानक उसकी कीमत में आसमान छूने लगी। कुछ लोग गर्मी से बेखल होकर बीमार पड़ने लगे तो कुछ महंगाई से, सारे नगर में त्राहि-त्राहि मच गई।

किसी को कुछ न सूझ रहा था कि राजा से कैसे निपटा जाए मध्य रात्रि में कुछ विद्वानों की सभा बुलायी गयी। वे सभी पत्र में मंत्रणा करके फिर मंत्री के पास पहुंच गए और बोले, 'मंत्री जी कृपा कर कुछ तो करिए। ऐसे तो सब मर जायेंगे। मंत्री ने लोगों को आश्वासन दिया कि वह महाराज से एक बार फिर बात करेगा, मामला टलता न देख मंत्री फिर महाराज के पास पहुंच गया और बोला, 'राजन, नगर के सभी लोग बीमार पड़ रहे हैं। महाराज ने तुरंत ही पछुलिया, 'क्यों ! क्या ये जेब में प्याज नहीं रख रहे हैं।' अगर वे बीमार पड़ रहे हैं तो उनसे कहो वे प्याज का शबूत पियें, प्याज की सब्जी बनाये नहीं तो पकौड़े बनाए, खाए और खिलाए। मरे आदेश का तुरंत पालन किया

महत्वपूर्ण पहलू है आपातकालीन सेवाओं की व्यवस्था। कई मामलों में समय पर इलाज मिलने से जान बचाई जा सकती है, लेकिन अक्सर एंबुलेंस देर से पहुंचती है या आसपास उचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं होती। यदि राजमार्गों के किनारे आधुनिक ट्रॉमा सेंटर और बेहतर एंबुलेंस नेटवर्क विकसित किए जाएँ, तो मृत्यु दर को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

सड़क दुर्घटनाओं की आर्थिक और सामाजिक कीमत भी बहुत बड़ी होती है। एक दुर्घटना केवल एक व्यक्ति की जान नहीं लेती, बल्कि पूरे परिवार को संकट में डाल देती है। कई बार परिवार का कमाने वाला सदस्य खो जाता है, जिससे आर्थिक और मानसिक दोनों तरह का नुकसान होता है। इस दृष्टि से सड़क सुरक्षा केवल एक तकनीकी मुद्दा नहीं, बल्कि एक मानवीय समस्या है, जिस पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। अब समय आ गया है कि हम सड़क निर्माण और प्रबंधन के अपने दृष्टिकोण को बदलें। हर स्तर पर सुरक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, चाहे वह योजना बनाना हो, निर्माण करना हो या संचालन करना। अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाना, नियमित सुरक्षा जांच करना और जोरिखम कम करने वाले उपायों को लागू करना बेहद जरूरी है। साथ ही नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए सख्त दंड और पारदर्शी जवाबदेही व्यवस्था भी सुनिश्चित करनी होगी।

सच कहें तो यहाँ एक प्रश्न उठता है कि भारत विश्वस्तरीय सड़कें बना सकता है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या वह उन्हें अपने नागरिकों के लिए सुरक्षित बना सकता है। ऐसा विकास, जो मानव जीवन की कीमत पड़े हो, वास्तव में विकास नहीं कहा जा सकता। सड़कें अक्सर, प्रगति और जुड़ाव का प्रतीक होनी चाहिए, न कि भय और मृत्यु का। अब समय में राजमार्गों पर बढ़ती दुर्घटनाएँ हमारे विकास मॉडल की कमजोरियों को उजागर करती हैं। नीतियाँ और न्यायिक निर्देश दिशा दिखाते हैं, लेकिन उनकी सफलता हमारे सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करती है। अब समय है कि सड़कें मौत के गलियारे नहीं, बल्कि सुरक्षित और सुगम यात्रा के मार्ग बनें। तभी हम सच्चे अर्थों में विकास को साथक बना पाएँगे और मानव जीवन की गरिमा को बनाए रख सकेंगे।



नृसिंह जयंती पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।



भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में कुछ पर्व केवल तिथियों के उत्सव नहीं बल्कि जीवन-दर्शन के ऐसे प्रकाशस्तंभ हैं, जो युगों-युगों तक मानवता को दिशा देते रहते हैं। नृसिंह जयंती ऐसा ही एक दिव्य पर्व है, जो यह उद्घोष करता है कि जब-जब अधर्म अपनी सीमाएं लांघता है और अहंकार सत्य को चुनौती देता है, तब ईश्वर स्वयं धर्म की रक्षा के लिए अवतरित होते हैं। वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाने वाला यह पावन दिवस भगवान विष्णु के चौथे अवतार (नृसिंह) के प्राकट्य का प्रतीक है। इस वर्ष नृसिंह जयंती अथवा नृसिंह प्रकटोत्सव 30 अप्रैल को मनाई जा रही है। नृसिंह अवतार की सबसे अद्भुत विशेषता यह है कि यह ईश्वर के 'उग्र' और 'करुण' दोनों ही स्वरूपों का एक साथ दर्शन कराता है। आधा मनुष्य और आधा सिंह रूप में प्रकट होकर उन्होंने यह सिद्ध किया कि दिव्यता किसी सीमित परिभाषा में बंधी नहीं होती। यह अवतार केवल दैत्यराज हिरण्यकशिपु के अंत का कारण नहीं बना बल्कि इससे यह संदेश भी मिला कि जब अन्याय अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है, तब न्याय किसी अप्रत्याशित रूप में प्रकट होकर संतुलन स्थापित करता है।

पौराणिक कथा के अनुसार, हिरण्यकशिपु ने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा से ऐसा वरदान प्राप्त किया, जिसने उसे लगभग अजेय बना दिया। वह न दिन में मारा जा सकता था, न रात में; न घर के भीतर, न बाहर; न अस्त्र से, न शस्त्र से; न मनुष्य से, न पशु से। यह वरदान उसके लिए केवल सुरक्षा कवच नहीं बल्कि अहंकार का विष बन गया। उसने स्वयं को ईश्वर घोषित कर दिया और समस्त प्रजा से अपनी ही पूजा करवाने लगा लेकिन इसी अंधकार के बीच उसके पुत्र प्रह्लाद ने सत्य और भक्ति का दीप जलाए रखा। यहां से इस कथा का सबसे गहरा

अधर्म के अंत और अटूट विश्वास का शंखनाद है नृसिंह अवतार

पौराणिक कथा के अनुसार, हिरण्यकशिपु ने कठोर तपस्या करके ब्रह्मा से ऐसा वरदान प्राप्त किया, जिसने उसे लगभग अजेय बना दिया। वह न दिन में मारा जा सकता था, न रात में; न घर के भीतर, न बाहर; न अस्त्र से, न शस्त्र से; न मनुष्य से, न पशु से। यह वरदान उसके लिए केवल सुरक्षा कवच नहीं बल्कि अहंकार का विष बन गया। उसने स्वयं को ईश्वर घोषित कर दिया और समस्त प्रजा से अपनी ही पूजा करवाने लगा लेकिन इसी अंधकार के बीच उसके पुत्र प्रह्लाद ने सत्य और भक्ति का दीप जलाए रखा।

आध्यात्मिक आयाम सामने आता है, एक ओर अहंकार से अंधा हुआ पिता और दूसरी ओर अटूट विश्वास से प्रकाशित पुत्र। प्रह्लाद की भक्ति केवल धार्मिककर्मकांड नहीं थी बल्कि वह सत्य के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक थी। उसे विष दिया गया, अग्नि में बैठाया गया, ऊंचाई से गिराया गया किंतु हर बार ईश्वर की अदृश्य कृपा ने उसकी रक्षा की। प्रह्लाद का विश्वास था, 'नारायण सर्वत्र है' और यही विश्वास अंततः साकार हो उठा। जब अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया, तब वह ऐतिहासिक क्षण आया, जब ईश्वर ने एक ऐसी लीला रची, जो आज भी अद्वितीय मानी जाती है। एक जड़ खंभे से गर्जना के साथ प्रकट होकर भगवान विष्णु ने 'नृसिंह' रूप धारण किया। यह प्राकट्य केवल चमत्कार नहीं था बल्कि यह घोषणा थी कि ईश्वर जड़ और चेतन दोनों में समान रूप से विद्यमान हैं। उन्होंने संध्या समय, सभा भवन की देहरी पर, अपनी जंघा पर बैठकर और अपने नखों



से हिरण्यकशिपु

बुद्धि मानव चातुर्य से कहीं अधिक व्यापक और सूक्ष्म होती है। नृसिंह अवतार का यह प्रसंग हमें यह संदेश भी देता है कि धर्म केवल बाहरी व्यवस्था नहीं बल्कि आंतरिक संतुलन है। जब मनुष्य अपने

देते हैं। श्रद्धालु यहां केवल दर्शन करने नहीं बल्कि उस दिव्य ऊर्जा का अनुभव करने आते हैं, जिसने कभी अधर्म का अंत किया था। नृसिंह जयंती का महत्व केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है बल्कि

यह आत्मचिंतन का भी अवसर है। यह हमें अपने भीतर के 'हिरण्यकशिपु' (अहंकार, क्रोध और लोभ) को पहचानने और उसे समाप्त करने का संदेश देता है। साथ ही, यह हमें प्रह्लाद की तरह अटूट विश्वास, धैर्य और सत्यनिष्ठा को अपनाने की प्रेरणा देता है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं, 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृता', अर्थात् जब-जब धर्म की हानि होती है, तब मैं अवतरित होता हूँ। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं बल्कि हर युग में घटित होने वाली आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जहां सत्य अंततः असत्य पर विजय प्राप्त करता है।

आज के समय में, जब समाज असत्य, अन्याय, हिंसा, नैतिक पतन जैसी अनेक प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है, तब नृसिंह जयंती का संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। यह हमें यह विश्वास दिलाता है कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि हमारा मार्ग सत्य का है और हमारा विश्वास अडिगा है तो ईश्वर की कृपा अवश्य प्राप्त होती है। नृसिंह जयंती एक चेतना है धर्म की रक्षा की, सत्य की स्थापना की और अहंकार के विनाश की। यह हमें संदेश देती है कि ईश्वर केवल मंदिरों या ग्रंथों में ही नहीं बल्कि हर उस हृदय में निवास करते हैं, जहां सच्ची भक्ति, निष्कपट विश्वास और सत्य के प्रति अटूट निष्ठा होती है। इस पावन अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने जीवन में प्रह्लाद जैसी आस्था और नृसिंह जैसी निर्भीकता को अपनाएँ ताकि हम भी अपने भीतर और समाज में धर्म, न्याय और सत्य की स्थापना कर सकें।

दृष्टिकोण

अनिल त्रिवेदी

लेखक अधिवक्ता हैं।



आभासी दुनिया न तो प्राकृतिक है साथ ही साथ वास्तविक भी नहीं है। पर वास्तविक या प्राकृतिक दुनिया के मनुष्यों पर आभासी दुनिया का प्रभाव बेतहाशा बढ़ता ही जा रहा है। देखने, सुनने, समझने के साथ साथ मनुष्यों के मन मस्तिष्क पर आभासी दुनिया का प्रभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। वास्तविक दुनिया में रहते हुए भी हम जीवन की मूल प्रकृति या वास्तविकता से लगातार धीरे धीरे ही सही पर थोड़े थोड़े दूर होते जा रहे हैं और आभासी गतिविधियों को निरन्तर जाने अनजाने अपनाने ही नहीं, प्राण प्रण से मानने भी लगे हैं। आभासी दुनिया ने हमारे देखने सुनने और प्रतिक्रिया करने के तौर तरीकों को बहुत ही गहरा से बदल दिया है। हम में से कई लोगों को समझ तो यह भी बनने लगी है कि आभासी दुनिया के बिना जीवन जीना ही अब संभव ही नहीं रहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि आधुनिक दुनिया आभासी दुनिया की दीवानी होती जा रही है। जिस तेजी से आभासी दुनिया ने हमारी आंखों और कानों को बँटे बँटे ही व्यस्त ही नहीं अतिव्यस्त से लेकर अस्त-व्यस्त कर दिया है की हम हर दिन वास्तविक जीवन की निरन्तर चलने वाली प्राकृतिक गतिविधियों और आपाधापी से हर क्षण दूर होते जा रहे हैं।

राजनीति

(राजीव खंडेलवाल)

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, बैतुल सुधार न्यास)

राज्यसभा में आम आदमी पार्टी (आप) के दो-तिहाई से ज्यादा 7 सदस्यों द्वारा संसदीय दल (राज्य सभा) का विभाजन कर भाजपा में शामिल होना कई सवाल खड़े करता है। इस घटनाक्रम ने अनायास ही फिल्म हम आप के हैं कौन? की याद दिला दी-पर यहाँ सवाल रिस्तों का नहीं, बल्कि राजनीतिक पहचान का है।

नाम बड़े और दर्शन छोटे खोटे

आम आदमी के नाम पर कुछ खास करने राजनीति में उतरी पार्टी क्या अब कुछ खास की होकर सत्ता की चमक-दमक में अपने मूल स्वरूप से दूर हो गई है? कभी 'तुम' के अपनत्व से 'आप' के सम्मान तक की यात्रा करने वाली पार्टी अब कहीं ऊँची दुकान, फीका पकवान साबित तो नहीं हो रही? "आप" "ओपचारिक" होकर भी थी, लेकिन निसंदेह 'सम्मानिय' शब्द था। परन्तु जिस तरह भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर इंडिया अगेस्ट करप्शन के बैनर तले जन आंदोलन खड़ा कर विशिष्ट "पहचान" ("नीति नहीं?") लेकर स्थापित हुई "आप" पार्टी भ्रष्टाचार में कंड तक डूब कर 'आप' रूपी "ओपचारिकता" को भी इस कदर बदनाम कर दिया कि ओपचारिक रूप से "आप" से मिलने में लोग दूरी बनाने लगे। वर्तमान तथ्य व सत्य यही है। "आम" के मौसम में यह तो होना ही था राजनीति में भी प्रकृति के नियम लागू होते हैं। यदि आम समय पर तोड़कर पकाने के लिए सुरक्षित न रखा जाए, तो उसका गिरना तय है। इसी संदर्भ में राघव चड्ढा जैसे नेताओं का पार्टी छोड़ना इस बात का संकेत देता है कि भीतर ही भीतर कुछ खिचड़ी पक रही थी।

कभी भ्रष्टाचार के खिलाफ झाड़ू लेकर

आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया!

आभासी दुनिया जड़ और अचेतन वस्तुओं पर कोई असर नहीं करती है पर चेतन मन और जीवन के मूल स्वरूप को पूरी तरह से वास्तविक जीवन से परे ढकेलते हुए एक आभासी दुनिया जो वास्तव में मौजूद ही नहीं है का अत्यधिक आदी बनाने में सतत सक्रिय हैं। प्राकृतिक जीवन से जुड़ी मूल चेतना को आभासी गतिशीलता में बदलकर वास्तविक चेतना या प्राकृतिक जीवन को आभासी जड़ता में बदल डालती है। इस में सबसे ज्यादा उल्लेखनीय बात यह है कि प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया का मनुष्य अपने आप आभासी दुनिया में इतना अधिक आत्ममुग्ध हो जाता है कि उसके अंदर आभासी और वास्तविक का भेद करने की क्षमता ही लुप्त होने लगती है। पर यह सबकुछ होते हुए भी प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया में मौजूद मनुष्येत्तर प्राणियों के मन मस्तिष्क और जीवनक्रम में आभासी दुनिया का शायद अब तक कोई असर नहीं हुआ है ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

वास्तविकता से परे जीवन को ले जाने में कैसे देखा जाए तो प्रकृति को कोई दिक्कत नहीं है और प्रकृति अपने अंश मनुष्य को आभासी दुनिया में धंसने या विलीन हो जाने से रोकती भी नहीं है। प्रकृति को मनुष्य के वास्तविक जीवन से छलांग लगा कर आभासी दुनिया में रच बस जाने में कोई भी दिक्कत या परेशानी नहीं महसूस हो सकती, जो कुछ भी परेशानी या डंड उठ खड़ा होता है वह प्राकृतिक मनुष्य के मन और जीवन में होता है। आभासी दुनिया पूरी तरह से आभासी है उसमें जीवन की रोजगारों की मशकत या सुख दुख भी नहीं आते जाते। आभासी दुनिया एक दम स्थितप्रज्ञ की तरह ही है। पर फिर भी वास्तविक दुनिया के मनुष्य को चीबीसों घंटों, बारहों महीनों भौंचक, अधीर और अस्थिर मन मस्तिष्क का बना चुकी है।

आभासी दुनिया जन्म और मृत्यु से परे तो है ही साथ ही साथ युद्ध और शांति से भी कोसें दूर है। आभासी दुनिया जड़ और अचेतन वस्तुओं पर कोई असर नहीं करती है पर चेतन मन और जीवन के मूल स्वरूप को पूरी तरह से वास्तविक जीवन से परे ढकेलते हुए एक आभासी दुनिया जो वास्तव में मौजूद ही नहीं है का अत्यधिक आदी बनाने में सतत सक्रिय हैं। प्राकृतिक जीवन से जुड़ी मूल चेतना को आभासी गतिशीलता में बदलकर वास्तविक चेतना या प्राकृतिक जीवन को आभासी जड़ता में बदल डालती है। इस में सबसे ज्यादा उल्लेखनीय बात यह है कि प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया का मनुष्य अपने आप आभासी दुनिया में अति अधिक आत्ममुग्ध हो जाता है कि उसके अंदर आभासी और वास्तविक का भेद करने की क्षमता ही लुप्त होने

लगती है। पर यह सबकुछ होते हुए भी प्राकृतिक या वास्तविक दुनिया में मौजूद मनुष्येत्तर प्राणियों के मन मस्तिष्क और जीवनक्रम में आभासी दुनिया का शायद अब तक कोई असर नहीं हुआ है ऐसा अनुमान किया जा सकता है। इस तरह एक बात तो यह तय है कि मनुष्य अपनी प्राकृतिक शक्तियों का मनमाना यांत्रिक विस्तार आभासी दुनिया में लिप्त रहकर अपने जीवन को जीने की आभासी पर राह चल पड़ा है। मनुष्य के अलावा बाकी सारे जीव अपने जीवन के प्राकृतिक रूप स्वरूप में बने हुए हैं। मनुष्य को अपने जीवन में जो ज्ञान या प्रत्यक्षीकरण का विस्तार प्राकृतिक रूप से मिला था वह आभासी दुनिया के आदी मनुष्य के लिए अब एक छोटे-से परदे में सिमट गया है। आभासी दुनिया के मनुष्य के लिए परदा ही जीवन है और जीवन ही परदा है।

अंतहीन या शून्य अंतरिक्ष से लेकर महाभारत की गहराई सब कुछ छोटे से परदे में समा गई है। आज आभासी दुनिया का समूचा सफर हाथ की दो चार अंगुलियों की गतिविधियों में सिमित हो गया है। इसी से आभासी दुनिया ने समूचे मनुष्य समाज को अपनी चंचल में समेट लिया है। वास्तविक दुनिया में धूमने, जानने, समझने और देखने, लिखने, बोलने और सुनने के लिए जो नाना इंजाम, धन, साधनों की जरूरत होती थी उसे कहीं भी बैठे-बैठे या लेटे लेटे या चलते फिरते भी मनुष्य स्क्रीन पर अपनी अंगुली के स्पर्श से ही सब कुछ सब कहीं करती रहने का साधन पा गया है। दुनिया भर में कहीं भी कुछ भी करना, देखना, भेजना या मंगाना हों तो यह आभासी दुनिया के मनुष्य के मन की कल्पना नहीं रहें, आभासी दुनिया का साकार सत्य बन गया है। यही

वह बिन्दु है कि निरक्षर से लेकर प्रकांड विद्वान और अरबपति से लेकर कंगल, किसी भी देश के राष्ट्रपति से लेकर आम जनता सब कोई दुनिया भर के किसी भी कोने में रहते हुए इस आभासी दुनिया को अपनी अंगुलियों की गतिविधियों से अपने जीवन में साकार कर सकता है। भले ही प्राकृतिक रूप से मनुष्य को कुछ भी हासिल नहीं हो पा रहा हो पर आभासी दुनिया सब कुछ करते रहने का वास्तविक अनुभव देने के बजाय करते रहने का आभास तो भरपूर दे ही रही है। आभासी दुनिया में सत्य से साक्षात्कार भले ही नहीं हो पा रहा है पर स्वप्न के सत्य होने का आभासी अनुभव हम सबको बिना किसी भेद भाव के तो हो ही रहा है। आज के काल का यह दृश्य आज की आभासी दुनिया का वास्तविक सत्य है!

आप- क्या भाजपा की 'बी' टीम? या 'सियासत का बदलता रंग'?

निकली पार्टी आज खुद ही अपनी ही झाड़ू से भ्रष्टाचार की धूल झाड़ती नजर आ रही है। सवाल यह है-क्या यह सफाई है या अंदरूनी बिखराव? चूंकि देश में गहराई तक जड़े जमा चुका "भ्रष्टाचार" जो "शिष्टाचार" का आवरण पहन चुका है, को तो वे समाप्त कर नहीं सकते थे। वह इसलिए कि भ्रष्टाचार पर "झाड़ू" लगाने के लिए "झाड़ू" को उर्जा देने वाली शक्ति, "जन लोकपाल" का वास्तविक रूप व अर्थ में वैसा गठन ही नहीं हुआ? जिसकी मांग की गई थी। बल्कि जन हट कर सिर्फ लोकपाल बन गया।

सत्ता का चरित्र बदलना असंभव

पुरानी कहावत है-सत्ता आदमी को नहीं बदलती, आदमी सत्ता के रंग में रंग जाता है। अरविंद केजरीवाल ने अन्ना आंदोलन के दौरान जिस व्यवस्था पर तीखे सवाल उठाए, वही सवाल आज उनकी अपनी सरकार पर उठ रहे हैं। याद कीजिए! जन लोकपाल को लेकर दिल्ली के जंतर मंतर में किए गए अन्ना आंदोलन में अरविंद केजरीवाल समय पूर्व भारतीय राजस्व सेवा त्याग कर नौकरशाह से नेता बने (राजनेता नहीं?) दहाड़ कर मंच से चिल्लाते थे, देश की संसद चोर है, जिसमें लगभग 162 से ज्यादा सांसद दागी होकर उन पर आपराधिक प्रकरण चल रहे हैं। तत्समय उन्होंने चुनौती देते हुए कहा था कि वे सब संसद से इस्तीफा दे, मुकदमा लड़े, निर्दोष होकर चुनाव जीतकर फिर वापिस संसद में आएँ। "असली लोकतंत्र तो सड़क पर है, संसद में नहीं।"

प्रकृति का नियम

कहा जाता है, जब सामने वाले पर दो

उंगलियाँ उठाई जाती हैं, तो सत्ता ही स्वतः ही तीन उंगलियाँ अपनी ओर उठ जाती हैं। प्रकृति ने अपना रूप दिखाया। दूसरों पर उंगली उठाने वाले अरविंद केजरीवाल स्वयं पर व उनके अधिकांश मंत्रियों पर भ्रष्टाचार से लेकर विभिन्न अपराधिक

यह कि सिद्धांत और व्यवहार में इतना अंतर क्यों?

आप विचारधारा या अवसरवाद

विचारधारा वाद या सिद्धांत लिए अन्य राजनीतिक दलों के समान आप की स्वयं



आरोप लगे। तब केजरीवाल ने स्वयं के जंतर मंतर के उद्घोष सिद्धांत के अनुसार एक भी आरोपी मंत्री को पद से नहीं हटाया और कहा यह सिर्फ प्रशासनिक "तंत्रों" सत्ता का दुरुपयोग कर भाजपा ने झूठे आरोपों में फंसाया है। यही कहना तो तत्समय उन दागी सांसदों का भी था। स्पष्ट है, जब अपने ही नेताओं पर आरोप लगे, तो नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली जैसी स्थिति बनती दिखी। प्रश्न यह नहीं कि आरोप सही हैं या गलत-बल्कि

की कोई विचारधारा नहीं है। आम आदमी पार्टी की उत्पत्ति अन्ना आंदोलन से अन्ना की अनिच्छा के रहते हुये हुई। यह आंदोलन स्वयं अन्ना का न होकर बल्कि भाजपा व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रायोजित अन्ना को केन्द्र में रखकर किया गया था, जिसके सूत्रधार पदों के पीछे गोविंदाचार्य (संघ प्रचारक) थे। यूपीए सरकार को कथित रूप से अस्थिर यह संकेत देती है कि पार्टी दो नावों की सवारी करने

लेकिन बाद में अन्ना आंदोलन की सफलता के चलते अरविंद केजरीवाल की तीव्र राजनीतिक इच्छा जाग्रत हो गई। इसी आप ने न केवल कांग्रेस को बल्कि भाजपा के शिखर पर व केंद्र में मोदी के रहते हुए दिल्ली के 7 सांसदों के रहने के बावजूद दिल्ली विधानसभा में तीन बार कड़ी मात दी। फलतः समय के साथ अलग-अलग राजनीतिक व्याख्याएँ होती रही हैं। कभी आप को भाजपा की बी टीम कहा गया, तो कभी कांग्रेस के खिलाफ सबसे मजबूत विपक्ष यानी जिसको भीस-राजनीतिक नैरेटिव परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहे। दिल्ली और पंजाब में शानदार जीत के बाद आप ने साबित किया कि वह आसमान से गिरी नहीं, जमीन से उगी पार्टी है। लेकिन हालिया घटनाएँ यह संकेत देती हैं कि पार्टी दो नावों की सवारी करने

राघव चड्ढा- प्रोफेशनल (सी.ए) से राजनीति के शिखर तक

राघव चड्ढा ने पार्टी छोड़ते समय कहा कि पार्टी अपने मूल सिद्धांतों से भटक गई है। बड़े दुखी मन से 'आप' से दूर जा रहा हूँ। वास्तव में वे आप पार्टी या आप (आम जनता) से दूर जा रहे हैं? मन दुखी क्यों है? यह स्पष्ट नहीं। संस्थापक सदस्य होने के कारण पार्टी छोड़ने का

दुख है अथवा अफसोस पार्टी के मूल सिद्धांत से भटक जाने पर उस भाजपा में जाने का दुख है? जिसे वे पानी पी-पी पीकर कोसते थे। राघव ने खुशी का इजहार नहीं किया? लेकिन सवाल उठता है

क्या घर का भेदी लंका ढाए वाली स्थिति है, या यह डूबते जहाज से कूटने जैसा निर्णय? अगर पार्टी गलत थी, तो इतने वर्षों तक साथ क्यों रहे? और यदि सही थी, तो अब अचानक क्या बदल गया? राजनीति में अक्सर साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे वाली रणनीति अपनाई जाती है-लेकिन जनता अब इन बारीकियों को समझने लगी है।

निष्कर्ष - दूध का दूध, पानी का पानी

राजनीति में जो व्यक्ति पार्टी छोड़ता है, वह उसे अपना सैद्धांतिक रवैया दर्शाते हुए स्वयं को भटका हुआ न उठकर पार्टी को ही भटके हुए रास्ते पर चलने का आरोप आसानी से लगा देता है। क्या उसमें इतना साहस नहीं होना चाहिए कि भारतीय लोकतंत्र में जब बहु-पार्टियों का अस्तित्व है, तब वे कभी भी किसी पार्टी को कभी भी ज्वाइन कर सकते हैं। क्योंकि सब पार्टियों का मूल तो एक ही सिद्धांत देश हित का होना चाहिए, जो है। यद्यपि देश हित के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि राजनीतिक दल कथनी और करनी में अंतर कम करें। अंततः जनता ही तय करती है-कौन आम है और कौन खास, कौन सच्चा है और कौन सियासी मुछौटा। क्योंकि लोकतंत्र में देर हो सकती है, अधेर नहीं और जनता सब देखती है, ऊँट किस करवट बैठता है यह भी।

स्वर्गीय खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 नाइट टेनिस बाल प्रतियोगिता के शुभारंभ पर जमकर आतिशबाजी जलाई

सोहागपुर। स्थानीय रेल्वे ग्राउंड पर मंगलवार रात को स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल की स्मृति में आयोजित विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग नाइट टेनिस बाल प्रतियोगिता के शुभारंभ के अवसर पर रेल्वे ग्राउंड पर जमकर आतिशबाजी जलाई गई। इस अवसर पर नगर की प्रथम नागरिक, नगर निरीक्षक राहुल रायकर सहित

जनप्रतिनिधियों के अलावा भाजपा के वरिष्ठ नेता, पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं

गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस गरिमामय स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल स्मृति विधायक ट्राफी 3 प्रीमियर लीग नाइट प्रतियोगिता पर स्वर्गीय मनोज खंडेलवाल के सुपुत्र यश खंडेलवाल, पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान एवं आयोजक रामप्रसाद वार्ड पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय विशेष रूप से उपस्थित थे। आयोजक पार्षद आशीष विश्वकर्मा मालवीय ने बताया कि मंगलवार को शुभारंभ के अवसर पर तीन क्रिकेट प्रतियोगिता रेल्वे ग्राउंड पर खेली गई। इस प्रतियोगिता का पहला मैच शिवांश क्लब एवं 72 फाइटर्स के बीच हुआ। इस मैच में 72 फाइटर्स ने 10 ओवर में 59 रन बनाए। इसके बाद शिवांश क्लब ने 8 ओवर में मैच जीत लिया। मेन ऑफ द मैच रोहित वंदीछेड़ को पुरस्कार प्रदान किया गया। दूसरा मुकाबला रामगंज टाइगर एवं 72 फाइटर्स के मध्य खेला गया। जिसमें 72 फाइटर्स ने 10 ओवर में 86 रन बनाए। वहीं रामगंज टाइगर 72 रन बनाकर आउट हो गई। 72 फाइटर्स ने 14 रन से मैच जीत लिया। कपिल पटेल को मेन ऑफ द मैच के सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता का तीसरा मैच में रामगंज टाइगर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 96 रन बनाए। वहीं शिवांश क्लब 80 रन पर आल आउट हो गई। तीसरे मैच में मेन ऑफ द मैच साजवान चूचू को सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में एमप्यारिंग शिवम दुबे, ऋषभ रघुवंशी, नीरज कापरे, अभिषेक, हैदर, जतिन साहू ने कौ। स्कोरिंग प्रवेश चौहान, परिणय मालवीय, सिद्धार्थ मौर्य, विशाल मालवीय, मास दीवान, अरबाज खान ने कौ। प्रतियोगिता के आंखों देखा हाल पत्रकार संघ अध्यक्ष पवनसिंह चौहान एवं अंकित श्रीती ने सुनाया। आज बुधवार को भी शाम 7 बजे से प्रतियोगिता के 3 मैच खेले जाएंगे। मैच का लाइव प्रसारण आर एस गैलरी यू ट्यूब चैनल पर किया जा रहा है।

नशा मुक्ति जागरूकता के संबंध में जिला स्तरीय बैठक, शैक्षणिक संस्थाओं के समीप तंबाकू उत्पादों की बिक्री न हो: कलेक्टर सोमेश मिश्रा

सोहागपुर। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय एन-कोड समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस. थोटा, जिला पंचायत सीईओ श्री हिमांशु जैन, अपर कलेक्टर श्री बृजेंद्र रावत, संयुक्त कलेक्टर एवं सिटी मजिस्ट्रेट श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती सरोज परिहार, श्रीमती नीता कोरी सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में जिले में मादक पदार्थों को तस्करी, नशे की रोकथाम के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम, जिले में नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्रों के पर्यवेक्षण के संबंध में आवश्यक चर्चा की गई। एन-कोड समिति की बैठक के दौरान कलेक्टर ने जिले में नशा मुक्ति अभियान को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए संबंधित अधिकारियों को कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए।

उत्कृष्ट स्कूल के उच्च माध्यमिक शिक्षक संदीप परसाई ने की अपने सूनूने घर में आत्महत्या !

सुसाइड नोट में सामने आई शासकीय कार्य के चौरफा दबाव की बात

गंज थाना पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी



बैतुल। शहर के कोठीबाजार क्षेत्र में बस स्टैंड के पास स्थित उत्कृष्ट स्कूल में लंबे समय से अंग्रेजी विषय के शिक्षक के पद पर पदस्थ मिलनसार एवं सरल स्वभाव के धनी 51 वर्षीय संदीप परसाई ने बुधवार की सुबह को अपने विकासनगर कालापाठा स्थित मकान में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इस दौरान उनके घर पर कोई नहीं था। सूचना मिलने पर गंज थाना पुलिस जांच करने में जुट गई है।

सबसे पहले भतीजी ने चाचा को फंदे पर लटका देखा, तो फिर घटना आई सामने - शहर के कालापाठा क्षेत्र में उच्च माध्यमिक शिक्षक संदीप परसाई अपने बड़े भाई के साथ मकान की ऊपरी मंजिल में रहते थे। बुधवार की दोपहर करीब 12 बजे उनकी भतीजी घर के ऊपरी मंजिल में ऊपर गई तो उसे चाचा फांसी के फंदे पर लटके हुए दिखाई दिए। इस पर उसने नीचे के फ्लोर में रह रहे परिजनों को इसकी जानकारी दी।

पत्नी और बच्चे थे बाहर और लगा लिया मौत को गले-

इस घटना के समय उनका ग्यारहवीं वलास में अध्ययनरत होनहार बेटा भय आर.डी. पब्लिक स्कूल में कोचिंग अटेंड करने गया हुआ था। वहीं उनकी पत्नी दो दिन पहले अपनी छोटी बेटो को छोटवी कक्षा में अध्ययनरत है, को लेकर शादी अटेंड करने के लिए अपने मायके उज्जैन गई हुई थी। घटना के समय घर में कोई नहीं था। तभी संदीप ने आत्महत्या करने जैसा कदम उठा लिया। उनका शव घर की छत में पंखा लगाने के हुक से बंधे कपड़े से लटका हुआ था।

पुलिस को मिला सुसाइड नोट, लिखा- काम का है चौरफा दबाव, अवसाद में हूँ

बैतुलगंज थाना प्रभारी नीरज पाल ने बताया कि मृतक संदीप के पास से सुसाइड नोट मिला है। जिसमें उन्होंने लिखा है कि पिछले डेढ़-दो माह से भारी अवसाद में हूँ, शासकीय कार्य के चौरफा दबाव से बहुत परेशान चल रहा हूँ। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में जनगणना का काम चरणबद्ध तरीके से शुरू हो चुका है। यह कार्य शिक्षकों को संयुक्त रूप से करना है।

जन परिषद के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ एडवोकेट अन्नी भैया ने कहा

बैतुल हमारे लिए तीर्थ समान है

बैतुल। सामाजिक संस्था जन परिषद के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ एडवोकेट अंकलेश्वर दुबे (अन्नी भैया) ने मुलताई में अपने संक्षिप्त प्रवास के दौरान कहा कि जन परिषद से जुड़े बैतुल के बाहर के हजारों सदस्यों के लिए बैतुल, सामाजिक तीर्थ के समान है। क्योंकि बैतुल की माटी ने जिस जन परिषद को उसके शैशव काल में संरक्षित एवं प्रवर्धित किया, वहीं जन परिषद आज 37 वर्षों बाद एक विशाल

वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। पूरे देश में उसके 300 चैप्टर हैं। सात चैप्टर्स अन्य देशों में है। उन्होंने कहा कि वे बैतुल के नागरिकों को इस बेमिसाल सामाजिक उपलब्धि के लिए कृतज्ञता पूर्ण बधाई देते हैं। जन परिषद के मुलताई चैप्टर के अध्यक्ष नवीन ओंकार के अनुसार जन परिषद राष्ट्रीय स्तर की सामाजिक संस्था है, जो कि गत 37 वर्षों से सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में सक्रिय होने के साथ साथ, कई

ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व संदर्भ ग्रन्थों का प्रकाशन कर चुकी है। संस्था पर्यावरण पर बारह अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस आयोजित कर चुकी है। संस्था के इस समय पूरे देश में 300 से अधिक एवं विदेशों में 7 चैप्टर बन चुके हैं। संस्था प्रतिवर्ष उन व्यक्तियों को अलंकृत करती है, जो कि रचनात्मक एवं सामाजिक सुधार के कार्यों को मूर्तरूप दे रहे हैं। संस्था का मुख्य आधार मानवीय, सामाजिक एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण है।



समर्थन मूल्य पर चना खरीदी व्यवस्था चरमराई

सर्वर फेल, अव्यवस्थाएं हावी- किसानों को दो-दो दिन भटकना पड़ रहा, ट्रकों में भरा चना अटका



बैतुल/मुलताई। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य समय पर दिलाने और खरीदी प्रक्रिया को सरल बनाने के उद्देश्य से शासन द्वारा समर्थन मूल्य पर चना खरीदी शुरू की गई है। लेकिन जमीनी हकीकत इसके विपरीत नजर आ रही है। अव्यवस्थित खरीदी केंद्र, तकनीकी खामियां और मूलभूत सुविधाओं की कमी ने इस पूरी व्यवस्था को किसानों के लिए बड़ी परेशानी बना दिया है। किसानों का कहना है कि पोर्टल पर लगातार सर्वर डाउन रहने के कारण स्लॉट बुकिंग नहीं हो पा रही है। इसके चलते किसान अपनी उपज बेचने के लिए दो-दो दिनों तक मंडी

में भटकने को मजबूर हैं। इतना ही नहीं, सर्वर

● समिति ने अब तक खरीदा 3066 क्विंटल चना - कृषि उपज मंडी परिसर में समर्थन मूल्य पर चना खरीदी का कार्य बहुउद्देशीय सेवा सहकारी समिति मर्यादित परमंडल द्वारा किया जा रहा है। संस्था प्रबंधक देवीदास नरवरे के अनुसार, 8 अप्रैल से शुरू हुई खरीदी में अब तक 3066 क्विंटल चना खरीदा जा चुका है। समिति अपने संसाधनों के माध्यम से सुबह से रात तक अधिक से अधिक किसानों की उपज खरीदने का प्रयास कर रही है। किसानों ने मांग की है कि भीड़ और अव्यवस्था को देखते हुए नजदीकी उपज गोदामों को भी खरीदी केंद्र बनाया जाए, ताकि उन्हें राहत मिल सके और खरीदी प्रक्रिया सुचारू रूप से चल सके।

तरह बाधित हो रही है, जिससे खरीदा गया चना

परिवहन के लिए आगे नहीं बढ़ पा रहा है।

इनका कहना है

सर्वर, स्लॉट बुकिंग, बिलिंग और स्थान की समस्याएं हमारे स्तर की नहीं हैं। इसके बावजूद हम लगातार प्रयास कर रहे हैं कि अधिक से अधिक किसानों की उपज समय पर खरीदी जा सके।

देवीदास नरवरे, संस्था प्रबंधक, बहुउद्देशीय सेवा सहकारी समिति मर्यादित परमंडल, मुलताई

एक ही स्थान पर गेहूँ-चना खरीदी, जगह कम

कृषि उपज मंडी परिसर में एक ही स्थान पर गेहूँ और चना दोनों की खरीदी की जा रही है। किसानों के अनुसार यह स्थल एक फसल की खरीदी के लिए भी पर्याप्त नहीं है, जिससे अव्यवस्था और भी बढ़ रही है। मंडी में किसानों के लिए पीने के पानी जैसी बुनियादी सुविधा तक उपलब्ध नहीं है, जिससे उनकी परेशानी दोगुनी हो रही है। परिवहन भी प्रभावित, ट्रक खड़े-खड़े हो रहे खराब-सर्वर और बिलिंग की समस्या का असर परिवहन व्यवस्था पर भी साफ दिखाई दे रहा है। ट्रक मालिकों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। ट्रक मालिक संजु रघुवंशी के अनुसार, उनके 10 चक्का ट्रक (क्रमांक रुवक 09 स 3948) में करीब 250 क्विंटल चना पिछले दो दिनों से लोड है, लेकिन बिलिंग न होने के कारण ट्रक वहीं खड़ा है। इससे उन्हें आर्थिक नुकसान के साथ अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है।

वन अधिकार अधिनियम के लंबित प्रकरणों का करें त्वरित निराकरण: कलेक्टर

कलेक्टर ने जनजातीय कार्य विभाग की समीक्षा कर योजनाओं की प्रगति की ली जानकारी

बैतुल। कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे ने कलेक्टर सभाकक्ष में जनजातीय कार्य विभाग की विस्तृत समीक्षा बैठक आयोजित कर विभागीय योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति एवं आवास सहायता योजना के तहत एमपी टॉस पोर्टल पर शत-प्रतिशत वेरिफिकेशन एवं स्वीकृति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कोई भी पात्र छात्र योजना के लाभ से वंचित न रहे, इसके लिए शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के प्राचार्य जिम्मेदारी के साथ कार्य करें। कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने छात्रावास एवं आश्रमों की व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान देने के निर्देश देते हुए कहा कि अधीक्षक नियमित रूप से उपस्थित रहें। छात्रावासों में साफ-सफाई, भोजन मेनु एवं भोजन की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। साथ ही विद्यार्थियों के स्वास्थ्य परीक्षण की समीक्षा के लिए सभी छात्रों की आभा आईडी तैयार करने के निर्देश भी दिए गए। इसके अलावा अंतरजातीय विवाह प्रोत्साहन योजना के ऑनलाइन आवेदन एमपी टॉस पोर्टल पर किए जाने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार करने को कहा गया। वन



अधिकार अधिनियम के अंतर्गत लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने भैंसदेही एवं भीमपुर जनपद के मामलों के त्वरित निराकरण के लिए संबंधित अनुविभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया। साथ ही इन प्रकरणों को आगामी टोपल बैठक में शामिल करने के निर्देश दिए गए। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों की समीक्षा के लिए आगामी माह में अलग से बैठक आयोजित करने के निर्देश भी दिए गए। विभागीय निर्माण कार्यों के निरीक्षण के दौरान उपर्युक्तों को स्थल पर उपस्थित रहकर जियो-टैग फोटो प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए। बैठक में बोर्ड परीक्षा परिणामों पर भी चर्चा की गई। कलेक्टर ने 40 प्रतिशत से कम तथा 100 प्रतिशत परिणाम वाले विद्यालयों के प्राचार्यों से उनके प्रयासों की जानकारी प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। बैठक में सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विवेक पांडे सहित अन्य शिक्षा और जनजातीय कार्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

कार्यालय नगर पालिका परिषद बैतुल (म. प्र.)

क्रमांक/स्वा.शा./ई./1643

बैतुल दिनांक 24/04/2026

//ई-टेंडर आमंत्रण सूचना//

(द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना)

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीकृत प्रणाली में पंजीकृत टेकेंदारों से ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट <https://mptenders.gov.in/nicgep/app> पर देखा जा सकता है।

क्र.	ऑन लाईन निविदा क्र.	कार्य / सामग्री का विवरण	कार्य के समापन तिथि एवं लागत	निविदा मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1	2026_UAD_502754_1	HYDRA CRANE SERVICE ON RENT INCLUDING DIESEL AND DRIVER OPERATOR COMPLETE IN WORKING CONDITION IN MUNICIPAL AREA AT MUNICIPAL OFFICE BETUL	1- 2026-27 2- 1000000/-	1- 2000/- 2- 10000/-	11/05/2026

नोट :- निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के सशोधन का प्रकाशन ऑनलाइन <https://mptenders.gov.in/nicgep/app> की वेबसाइट पर ही किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

(नवनीत पाण्डेय), सीएमओ, नगरपालिका परिषद बैतुल

कलेक्टर ने लंबित आवेदनों की गहन समीक्षा की

समय-सीमा बैठक में पेयजल व्यवस्थाओं, लंबित प्रकरणों की निराकरण स्थिति सहित विभागीय कार्यों का जायजा लिया

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने आज समय-सीमा बैठक में लंबित आवेदनों की गहन समीक्षा की। उन्होंने विदिशा जिले के विभिन्न विभागों द्वारा क्रियान्वित कार्यों की जानकारी प्राप्त कर लंबित प्रकरणों का समयावधि में निराकरण करने के निर्देश दिए एवं शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन सहित जिले में संचालित शासन के महत्वपूर्ण अभियानों की क्रियान्वयन स्थिति का जायजा लिया है। कलेक्टर श्री गुप्ता ने टीएल बैठक में विदिशा जिले के ग्रामीण व नगरीय निकाय क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति बाधित ना हो पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग तथा नगरीय निकायों के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों और नगरीय निकाय के बाड़ों में किसी भी प्रकार से पानी के लिए नागरिकों को परेशान ना होना पड़े इसके लिए



विशेष कार्य करें। इस दौरान जल जीवन मिशन अंतर्गत नल जल योजनाओं के हस्तांतरण की स्थिति का भी जायजा लिया गया साथ ही जिले में हैंडपंपों की चालू, बंद स्थिति का जायजा लेते हुए खराब हैंडपंपों के सुधार कार्य हेतु निर्देशित किया गया है। उन्होंने निर्देश दिए हैं कि विदिशा जिले के जिन अनुसूचित जाति, जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में हैंड पंप की आवश्यकता है उन क्षेत्रों में आवश्यकताओं को ध्यानगत रखते हुए संबंधित क्षेत्र के एसडीएम अपर कलेक्टर कार्यालय एवं इंपीडब्ल्यूडी को हैंडपंप के प्रस्ताव भेजने की कार्यवाही करें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बैठक में पीएम राहत योजना अंतर्गत लंबित प्रकरणों की समीक्षा की। साथ ही सीमांकन और बंटवारा के लंबित प्रकरणों की गहन समीक्षा दौरान उन्होंने संबंधित क्षेत्र के तहसीलदारों को निर्देशित किया है कि

सीमांकन के प्रकरणों में आवेदक को यहाँ-वहाँ भटकना न पड़े उनकी समस्याओं का निराकरण समय-सीमा में करें और सीमांकन की कॉपी दोनों पक्षों को उपलब्ध कराएं। उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिले में कोई भी बच्चा कुपोषित ना रहे। कुपोषित बच्चे चिन्हित हुए हैं तो उन्हें एनआरसी वडों में भर्ती कराया जाकर उनकी उचित देखभाल कर उन्हें कुपोषण से बाहर निकालने के लिए कार्य किया जाए। बैठक में कुपोषित बच्चों की जानकारी प्रदर्शित की गई जिस पर कलेक्टर ने विभाग के अधिकारियों को इस क्षेत्र में और अधिक मेहनत करने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा उन्होंने जिले के जिन क्षेत्रों में आंगनबाड़ी केंद्र समय पर नहीं खुल रही या बंद रहती हैं उन पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

जल गंगा संवर्धन अभियान

कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने बैठक में प्रदेश व्यापी जल गंगा संवर्धन अभियान तहत जिले में क्रियान्वित कार्यों की स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण अभियान है जिसके माध्यम से हम हमारे जल स्रोतों प्राचीन कुओ, बावड़ियों को सवारने का कार्य कर रहे हैं। अभियान तहत क्रियान्वित कार्यों को प्राथमिकता देते हुए हमें निर्धारित लक्ष्यों की शत प्रतिशत पूर्ति करना है। इस दौरान बैठक में प्रेजेंटेशन के माध्यम से बताया गया कि जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत 2031 खेत तालाबों में से 1247 कार्य पूर्ण हुए हैं, जबकि शेष कार्य प्रगतिरत हैं। इसी प्रकार 1729 डम बेल रिचार्ज में से 1472 कार्य पूर्ण हुए हैं, जबकि शेष कार्य प्रगतिरत हैं के अलावा अमृत सरोवर, अन्य जल संरक्षण के कार्य, जल संचय में जन भागीदारी पोर्टल, सार्वजनिक प्याऊ, बावड़ी व नदियों के घाटों की साफ-सफाई सहित इत्यादि कार्यों की समीक्षा बैठक में की गई। इस दौरान बैठक में अपर कलेक्टर श्री अंशुल कुमार डामोर, संयुक्त कलेक्टर द्वय श्रीमती दीपा श्री गुप्ता, सुश्री निकिता तिवारी, विदिशा एसडीएम श्री क्षितिज शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे, जबकि खंड स्तरीय अधिकारी वीसी के माध्यम से जुड़े रहे।



विदिशा में आगजनी रोकथाम को लेकर नगर पालिका की पहल

टिम्बर व फर्नीचर व्यापारियों को दिए सख्त सुरक्षा निर्देश

विदिशा (निप्र)। विदिशा नगर में लगातार बढ़ती आगजनी की घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए नगर पालिका द्वारा फर्नीचर एवं टिम्बर व्यापारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य व्यापारियों को अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूक करना और संभावित हादसों को रोकने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश देना रहा। बैठक के दौरान अधिकारियों ने व्यापारियों को स्पष्ट रूप से समझाया कि वे अपनी दुकानों और गोदामों में ज्वलनशील पदार्थों का अत्यधिक भंडारण न करें। साथ ही प्रत्येक प्रतिष्ठान में अग्निशमन के आवश्यक उपकरण अनिवार्य रूप से रखने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों ने विशेष रूप से 'फायर बॉल' जैसे आधुनिक और त्वरित अग्निशमन उपकरण रखने की सलाह दी, ताकि आपात स्थिति में तुरंत आग पर नियंत्रण पाया जा सके और बड़े नुकसान से बचा जा सके। इसके अतिरिक्त विद्युत् सुरक्षा को लेकर भी गंभीरता बरतने के निर्देश दिए गए। व्यापारियों से कहा गया कि वे अपनी दुकानों में वायरिंग, स्विच बोर्ड और अन्य इलेक्ट्रिकल उपकरणों की नियमित जांच कराएं, जिससे शॉर्ट सर्किट जैसी घटनाओं से बचाव हो सके। बैठक में नगर पालिका सीएमओ दुर्गेश सिंह, डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट मयंक जैन एवं इलेक्ट्रिकल इंजीनियर मौसम जैन सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों ने एक स्वर में कहा कि आगजनी की घटनाओं पर नियंत्रण के लिए प्रशासन और व्यापारियों के बीच सामूहिक सहयोग अत्यंत आवश्यक है। अंत में नगर पालिका द्वारा सभी व्यापारियों से अपील की गई कि वे दिए गए निर्देशों का पालन करें और नगर में सुरक्षित एवं संरक्षित वातावरण बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

संक्षिप्त समाचार

रायसेन में लगभग 300 हेमगाईस द्वारा की गई स्वगणना

रायसेन (निप्र)। रायसेन में नगर पालिका परिषद द्वारा डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट कार्यालय में जनगणना-2027 जागरूकता एवं स्वगणना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें एसडीएम श्री मनीष शर्मा, डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट श्री उमेश कुमार तिवारी के निर्देशन में लगभग 300 हेमगाईस कर्मचारियों द्वारा ऑनलाईन स्वगणना फार्म भरे गए। एसडीएम श्री शर्मा ने बताया कि सेल्फ इम्प्लूमेंटेशन एप के माध्यम से नागरिक स्वयं के परिवार की जनगणना एवं परिवार की जानकारी स्वयं दर्ज कर सकते हैं। यह भारत शासन का महत्वपूर्ण अभियान है, जिसमें सभी नागरिकों, को अपना सहयोग प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि नागरिक मोबाइल के माध्यम से स्वगणना करने के साथ ही परिचितों को भी इसके लिए जागरूक करें।

जिले में 02 मई को होगा लाइली लक्ष्मी उत्सव का आयोजन

रायसेन (निप्र)। मुख्यमंत्री लाइली लक्ष्मी योजना के तहत प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी 02 मई 2026 को लाइली लक्ष्मी उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। महिला बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री वृजेश जैन ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य बालिका सशक्तिकरण और मुख्यमंत्री लाइली लक्ष्मी योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करना है। यह आयोजन उत्सव के रूप में जिला, नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित होगा। जिसमें लाइली बालिका एवं उनके अभिभावक, लाइली क्लब की अध्यक्ष एवं सदस्य लाइली बालिकाओं के साथ स्थानीय जनप्रतिनिधिगण तथा गणमान्य नागरिक भी सम्मिलित होंगे। जिले की महिला बाल विकास विभाग की सभी परियोजना अधिकारी को 02 मई को लाइली लक्ष्मी उत्सव का प्रभावी और गरिमामय आयोजन किए जाने के संबंध में दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

रायसेन में दो सत्रों में 06 परीक्षा केन्द्रों पर संपन्न हुई राज्य सेवा एवं राज्य वन सेवा प्रारंभिक परीक्षा

रायसेन (निप्र)। मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग इन्टर द्वारा आयोजित राज्य सेवा एवं वन सेवा प्रारंभिक परीक्षा-2026 जिला मुख्यालय रायसेन पर निर्धारित 6 परीक्षा केन्द्रों पर दो सत्रों में संपन्न हुई। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा तथा पुलिस पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष गुप्ता द्वारा परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। इस दौरान रायसेन एसडीएम श्री मनीष शर्मा भी साथ रहे। राज्य सेवा एवं राज्य वन सेवा प्रारंभिक परीक्षा की प्रथम पाली में 1309 परीक्षार्थी उपस्थित रहे तथा 377 अनुपस्थित रहे। द्वितीय पाली में 1296 परीक्षार्थी उपस्थित रहे तथा 390 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

स्वगणना अभियान का निरीक्षण किया गया एवं नागरिकों को ऑनलाइन प्रक्रिया समझाई

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा के मार्गदर्शन में सभी अनुभाग में अनुभागीय अधिकारियों द्वारा स्वगणना कार्य का निरीक्षण किया गया। चौपाल के माध्यम से उन्होंने नागरिकों से सीधा संवाद कर नागरिकों से अपील की है कि वे स्व-गणना में बड़-चढ़कर भाग लें और अपने परिवार की पूरी जानकारी समय पर ऑनलाइन दर्ज करें। साथ ही उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि चौपाल के माध्यम से जागरूकता अभियान को और तेज किया जाए, ताकि हर व्यक्ति तक इसकी जानकारी पहुंच सके और जनगणना कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो सके। जनगणना-2027 के प्रथम चरण के अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का कार्य एक मई 2026 से 30 मई 2026 तक किया जाएगा। इसके पूर्व 16 अप्रैल 2026 से 30 अप्रैल 2026 तक स्व-गणना हेतु पोर्टल पर विशेष सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इस अवधि में नागरिक अपनी स्व-गणना समय रहते पूर्ण कर सकते हैं, जिससे आगामी प्रक्रिया और अधिक सुगम हो सके। इससे नागरिकों को घर, कार्यालय अथवा किसी भी स्थान से मोबाइल या कंप्यूटर के माध्यम से सुरक्षित रूप से जानकारी दर्ज करने की सुविधा मिलती है। यह न केवल समय की बचत करता है, बल्कि डेटा संग्रहण को अधिक सटीक एवं प्रभावी भी बनाता है।

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने गैरतगंज और सिलवानी क्षेत्र में उपार्जन केन्द्रों का किया निरीक्षण

रायसेन (निप्र)। जिले में बनाए गए विभिन्न उपार्जन केन्द्रों पर मप्र शासन के निर्देशानुसार समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन का कार्य किया जा रहा है। उपार्जन कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो, इसके लिए कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा द्वारा स्वयं जिले में सतत रूप से विभिन्न उपार्जन केन्द्रों का आकस्मिक निरीक्षण कर उपार्जन कार्य और केन्द्रों पर किसानों की सुविधा हेतु की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया जा रहा है। इसी क्रम में मंगलवार को कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा गैरतगंज क्षेत्र में उपार्जन केन्द्र श्रीगण वेयरहाउस, सिलवानी तहसील में ग्राम पाठा में उपार्जन केन्द्र राज राजेश्वरी वेयरहाउस, जमुनिया में उपार्जन केन्द्र पारसनाथ वेयरहाउस सहित विभिन्न उपार्जन केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा उपार्जन कार्य, उपज की गुणवत्ता, तुलाई कार्य सहित केन्द्र पर किसानों के लिए की गई व्यवस्थाओं का अवलोकन किया गया। साथ ही उपस्थित अधिकारियों तथा केन्द्र प्रभारी से अभी तक उपार्जित उपज की मात्रा, बारदाने की उपलब्धता, किसानों को राशि भुगतान आदि की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि शासन की उपार्जन नीति के अनुरूप उपार्जन कार्य किया जाए तथा किसानों को राशि भुगतान की कार्यवाही भी शीघ्रता से की जाए।



ग्रामीण में 1 मई से शुरू होगा मकान सूचीकरण, 13 सेक्टरों में बंटा कार्य

नर्मदापुरम (निप्र)। आगामी जनगणना 2027 के पहले चरण की तैयारियां जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में तेज हो गई हैं। 1 मई 2026 से मकान सूचीकरण का काम शुरू होगा, जिसके तहत सभी मकानों का डेटा मोबाइल एप के जरिए दर्ज किया जाएगा। स्थानीय निकायों ने मकानों पर नंबर अंकित करने का काम पहले ही पूरा कर लिया है। इसी क्रम में नर्मदापुरम तहसील के सुपरवाइजर रामकुमार गौर ने अपने प्रभार क्षेत्र का दौरा कर रणनीति तय की। श्री गौर ने बताया कि नर्मदापुरम तहसील के ग्रामीण क्षेत्र को 13 सेक्टरों में बांटा गया है।

यहां 13 सुपरवाइजर और 49 प्रगणकों की टीम काम करेगी। गौर को सेक्टर-02 की जिम्मेदारी दी गई है। इस सेक्टर में रंडाल, परदेह और बड़ोदिया कला ग्राम पंचायतें आती हैं। सेक्टर-02 में कुल 6 ब्लॉक बनाए गए हैं जिनमें लगभग 960 मकानों की गणना होगी। भ्रमण का मकसद जमीनी स्थिति समझकर काम को बेहतर तरीके से प्लान करना था। इस दौरान अर्जुन सिंह यादव पलासडोह, निकिता चौहान व शिवकिशोर चौर बड़ोदिया कला, भेरू प्रसाद पालीवाल परदेह, सुमित तिवारी, ललित यादव और सचिव मयूर बामनकर रंडाल मौजूद रहे।

बैतूल शहर का कलेक्टर डॉ सोनवणे ने किया सघन भ्रमण

प्रमुख चौकों के सौंदर्यीकरण और चौड़ीकरण के प्रस्ताव तैयार करने के लिए निर्देश



बैतूल (निप्र)। कलेक्टर डॉ सौरभ संजय सोनवणे ने मंगलवार सुबह बैतूल नगर का सघन भ्रमण कर विभिन्न चौक-चौराहों एवं प्रगतिरत कार्यों का निरीक्षण करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर डॉ सोनवणे ने कॉलेज चौक, शिवाजी चौक, लल्ली चौक और न्यू बैतूल स्कूल चौक का जायजा लिया। उन्होंने कॉलेज चौक के चौड़ीकरण कार्य करने तथा यह सुनिश्चित करने को कहा कि

स्कूल एवं कॉलेज के विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य के दौरान यातायात नियंत्रण का कड़ाई से पालन हो, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना की संभावना न रहे।

शहर के प्रमुख चौकों का बदलेगा स्वरूप

कलेक्टर डॉ सोनवणे ने शिवाजी चौक एवं

लल्ली चौक के सौंदर्यीकरण के लिए बड़े शहरों की तर्ज पर प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश नगरपालिका को दिए। साथ ही लल्ली चौक स्थित रोडरी को व्यवस्थित करने के निर्देश भी दिए। इसके बाद उन्होंने न्यू बैतूल स्कूल के पास प्रस्तावित गीता भवन के लिए चिन्हित स्थल का भी अवलोकन किया और वहां पार्किंग की व्यवस्थित प्लानिंग के निर्देश दिए। स्वच्छता सर्वेक्षण की तैयारियों के अंतर्गत उन्होंने ट्रेचिंग ग्राउंड का निरीक्षण कर इसकी शीघ्र शिफ्टिंग एवं एक्शन प्लान तैयार करने के निर्देश मुख्य नगरपालिका अधिकारी को दिए।

जामती में फायर स्टेशन और आईएसबीटी की तैयारी, कलेक्टर ने किया स्थल निरीक्षण

कलेक्टर डॉ सोनवणे ने ग्राम जामती में प्रस्तावित फायर स्टेशन एवं आईएसबीटी स्थल का भी निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। साथ ही एचएमटी फैक्ट्री पहुंचकर आगामी कार्ययोजना के संबंध में उद्योग विभाग से विस्तृत जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान एसडीएम डॉ अभिजीत सिंह, मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री नवनीत पांडे एवं उद्योग विभाग के श्री धीरज मंडलेकर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

नरवाई न जलाएं, वैकल्पिक प्रबंधन अपनाएं : प्रगतिशील किसान बने प्रेरणास्रोत

सीहोर (निप्र)। नरवाई जलाने की परंपरा को समाप्त कर पर्यावरण संरक्षण एवं मृदा उर्वरता बढ़ाने की दिशा में प्रदेश के प्रगतिशील किसान अब प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इसी क्रम में सीहोर जिले की जावर तहसील के ग्राम कुंडिया थांधा के प्रगतिशील किसान श्री भारत सिंह द्वारा नरवाई प्रबंधन के क्षेत्र में किया गया नवाचार अन्य किसानों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो रहा है। उन्होंने अपनी लगभग 65 एकड़ कृषि भूमि में बिना नरवाई जलाए आधुनिक तकनीकों एवं कृषि यंत्रों के माध्यम से सफलतापूर्वक फसल अवशेष प्रबंधन कर यह साबित किया है कि कम लागत में भी अधिक क्षेत्र में प्रभावी ढंग से खेती की जा सकती है। किसान श्री भारत सिंह द्वारा अपनाई गई तकनीक में विशेष प्रकार के कृषि यंत्र का उपयोग किया जाता है, जिसके माध्यम से खेत में खड़ी नरवाई को जड़ से काटकर उसे मिट्टी में मिला दिया जाता है। इसके पश्चात कल्टीवेटर या अन्य यंत्रों से भूमि को तैयार किया जाता है, जिससे फसल अवशेष प्राकृतिक रूप से सड़कर खाद का कार्य करते हैं। इससे भूमि की उर्वरता में वृद्धि होती है तथा अगली फसल के लिए बेहतर उत्पादन की संभावना बढ़ जाती है। कलेक्टर श्री बालागुरू के द्वारा भी इस नवाचार की सराहना करते हुए किसानों से अपील की गई है कि वे नरवाई जलाने जैसी हानिकारक प्रथा से बचें। नरवाई जलाने से जहां वायु प्रदूषण बढ़ता है, वहीं मिट्टी के पोषक जीव नष्ट हो जाते हैं और भूमि की उर्वरता में कमी आती है। इसके विपरीत, वैज्ञानिक पद्धतियों से नरवाई प्रबंधन करने पर पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ किसानों को आर्थिक लाभ भी प्राप्त होता है। इस नवाचार के लिए तहसीलदार श्री ओमप्रकाश चोरमा द्वारा किसान श्री भारत सिंह को पुष्पगुच्छ, भेंट कर सम्मानित किया गया।

जनसुनवाई में आमजन की समस्याओं का हुआ निराकरण

रायसेन (निप्र)। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा के निर्देशानुसार प्रति मंगलवार की भांति कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जनसुनवाई में जिला पंचायत सीईओ श्री कमल सोलंकी तथा अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय द्वारा आमजन की समस्याओं की सुनवाई कर उनका निराकरण किया गया। कुछ प्रकरणों में संबंधित अधिकारियों को शीघ्र आवश्यक कार्यवाही कर निराकरण हेतु निर्देशित किया गया। साथ ही अन्य तहसीलों से आए आवेदकों की समस्याओं के निराकरण हेतु वीसी के माध्यम से निर्देशित किया गया। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में डिप्टी कलेक्टर तथा जिला अधिकारी उपस्थित रहे। अनुभागों से एसडीएम, जनपद सीईओ, सीएमओ सहित अन्य अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जनसुनवाई में उपस्थित रहे।

नर्मदापुरम केन्द्रीय जेल में मानसिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित

30 बंदियों की हुई स्क्रीनिंग

नर्मदापुरम (निप्र)। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भोपाल एवं जेल मुख्यालय म.प्र. भोपाल के आदेश के अनुपालन में केन्द्रीय जेल नर्मदापुरम के खण्ड-अ में एक दिवसीय मानसिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर जिला चिकित्सालय नर्मदापुरम के मन कक्ष द्वारा लगाया गया। प्रतिमाह आयोजित होने वाले इस शिविर के क्रम में मंगलवार को जिला चिकित्सालय मन कक्ष से क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट सुश्री

नाजिया सिद्दीकी एवं नर्सिंग ऑफिसर श्री कांति यदुवंशी ने जेल में परिरूढ़ बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया। शिविर में 20 पुरुष बंदी और 10 महिला बंदी सहित कुल 30 बंदियों की मानसिक स्वास्थ्य स्क्रीनिंग की गई और उन्हें आवश्यक परामर्श दिया गया। इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री संतोष सोलंकी, उप अधीक्षक श्री प्रहलाद सिंह बरकड़े, अष्टकोण अधिकारी श्री हितेश बंडिया, मैट्रन श्रीमति इंदुराज साहू सहित अन्य जेल स्टाफ उपस्थित रहे।



पीएमएवाई-यू 2.0 के जरिए झुग्गीवासियों के पुनर्वास पर संसदीय समिति की बैठक में सांसद माया नारोलिया ने दी महत्वपूर्ण राय

नई दिल्ली: आवास और शहरी कार्य संबंधी स्थायी समिति की बैठक संपन्न, सभी के लिए आवास के विजन पर हुई गहन समीक्षा

नर्मदापुरम (निप्र)। नई दिल्ली शहरी गरीबों और झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले परिवारों के जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से आज नई दिल्ली स्थित संसदीय शोध विस्तार (एनेक्सी) में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। कक्ष संख्या 515 में आयोजित 'आवासन और शहरी कार्य संबंधी स्थायी समिति' की इस उच्चस्तरीय बैठक में मध्यप्रदेश से राज्यसभा सांसद माया नारोलिया ने सक्रिय रूप से भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष श्री मरुटा श्रीनिवासुतु

की विस्तृत समीक्षा की गयी चर्चा का मुख्य केंद्र बिंदु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सभी के लिए आवास' के संकल्प को धरातल पर उतारना रहा। सांसद श्रीमती माया नारोलिया ने बैठक में अपने विचार साझा करते हुए पीएमएवाई-यू 2.0 (PMAY - 2.0) योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की यह योजना शहरी निर्धनों के लिए न केवल छत्र सुनिश्चित करेगी, बल्कि उनके जीवन में सम्मान और सुरक्षा का नया संचार भी करेगी। बैठक में अधिकारियों के साथ

की विस्तृत समीक्षा की गयी चर्चा का मुख्य केंद्र बिंदु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सभी के लिए आवास' के संकल्प को धरातल पर उतारना रहा। सांसद श्रीमती माया नारोलिया ने बैठक में अपने विचार साझा करते हुए पीएमएवाई-यू 2.0 (PMAY - 2.0) योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर बल दिया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की यह योजना शहरी निर्धनों के लिए न केवल छत्र सुनिश्चित करेगी, बल्कि उनके जीवन में सम्मान और सुरक्षा का नया संचार भी करेगी। बैठक में अधिकारियों के साथ

योजना की बारीकियों और लाभार्थियों तक त्वरित लाभ पहुंचाने की कार्ययोजना पर गंभीर मंथन हुआ। सांसद श्रीमती नारोलिया ने मध्यप्रदेश के शहरी क्षेत्रों में चल रही आवास योजनाओं और झुग्गी पुनर्विकास की स्थिति पर भी चर्चा की, ताकि राज्य के पात्र परिवारों को इस नई पहल का अधिकतम लाभ मिल सके। बैठक में समिति के अन्य सदस्य और संबंधित मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे। जिन्होंने शहरी बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत किए।

राजगढ़ में पटरियों तक पहुंची खेत में लगी आग खतरा देख लोको पायलट ने 4 किलोमीटर उल्टी दौड़ा दी ट्रेन



राजगढ़ (नप्र)। पटरियों पर दौड़ती एक पैसेंजर ट्रेन और उसके सामने धकती आग। मंजर ऐसा कि पलक झपकते ही ट्रेन आग के गोले में तब्दील हो सकती थी। लेकिन तभी लोको पायलट ने वह किया जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी। उसने बिना वक्त गंवाए ट्रेन में रिवर्स गियर डाला और करीब 4 किलोमीटर तक गाड़ी को पीछे ले गया। यह फिल्मी सीन नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले का मामला है, जिसमें सैकड़ों यात्रियों की जान पर बन आई थी।

आसमान में छग गया काला धुआं- सोमवार दोपहर करीब 12:45 बजे, मकसी-रुटियाई सेवशन पर बीना-नागदा पैसेंजर अपनी रस्ता में थी। तभी ब्यावरा-राजगढ़ और पचौर स्टेशनों के बीच अचानक खेतों में लगी अवेध पराली की आग ने विकराल रूप ले लिया। तेज हवाओं ने आग की लपटों को सीधे रेलवे ट्रैक की ओर धकेल दिया। लोको पायलट ने देखा कि सामने ट्रैक पूरी तरह लपटों की चपेट में आ चुका है।

लोको पायलट ने लगा दिया रिवर्स गियर- आमतौर पर ट्रेनें पटरी पर आगे बढ़ती हैं, लेकिन यहां मौत सामने खड़ी थी। लोको पायलट ने तुरंत समझदारी का परिचय देते हुए ट्रेन को पीछे की ओर चलाना शुरू किया। करीब 4 किलोमीटर तक ट्रेन उल्टी दिशा में दौड़ती रही, जब तक कि यात्री सुरक्षित दायरे से बाहर नहीं निकल गए। इस दौरान पीछे आ रही साबरमती एक्सप्रेस (गुना-अहमदाबाद) को भी तुरंत ब्यावरा स्टेशन पर रोक दिया गया। नवल अग्रवाल, पीआरओ, भोपाल रेल मंडल ने कहा कि लोको पायलट ने आग को ट्रैक की ओर बढ़ते देख ट्रेन को पीछे ले जाने का बिल्कुल सही फैसला लिया। उनकी इस सूझबूझ ने सैकड़ों यात्रियों को गंभीर खतरे से बाहर निकाला। उन्हें इस वीरता के लिए पुरस्कृत किया जाएगा।

4 बजे तक ठप रहा रेल यातायात- आग इतनी भीषण थी कि ब्यावरा, पचौर, नरसिंहगढ़ और खिलोपुर से दमकल की गाड़ियां बुलानी पड़ीं। दोपहर 4 बजे तक रेल यातायात पूरी तरह ठप रहा। घिलचिलाती धूप और ऊपर से पास में धकती आग की वजह से ट्रेन के डिब्बे भट्टी की तरह तप रहे थे। यात्री 3 घंटे तक पसीने से तरबतर होकर अंदर ही फंसे रहे, लेकिन सबकी जान सलामत थी।

बाइक सवार की मौत के बाद कार्टवाइ पर सवाल

भोपाल के परवलिया सड़क पुलिस पर आरोप; फार्मट्रेक की जगह दूसरा ट्रैक्टर ज्वल करने के आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल की परवलिया सड़क पुलिस पर गंभीर आरोप लगे हैं। दरअसल, 27 मार्च को ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार की मौत हो गई थी। इसके बाद की गई कार्टवाइ संदेह के घेरे में है। दुर्घटना जिस ट्रैक्टर से हुई थी, उसकी जगह दूसरे ट्रैक्टर को ज्वल कर उसके मालिक को सौंप दिया गया। इसकी शिकायत एसपी ग्रामीण रामशरण प्रजापति तक पहुंची है। शिकायत की जांच कराई जा रही है। जानकारी के मुताबिक, 26 मार्च को सुबह साढ़े नौ बजे ग्राम रतनपुर निवासी मनोज विश्वकर्मा की बाइक को फार्मट्रेक कंपनी के नीले रंग के ट्रैक्टर-ट्रॉली ने पीछे से टक्कर मार दी थी। ट्रैक्टर की टक्कर लगने से बाइक सवार मनोज सड़क पर गिर गया और ट्रैक्टर का पहिया उसके ऊपर से निकल गया। दुर्घटना के बाद फार्मट्रेक ट्रैक्टर भी सड़क से नीचे पलट गया। सूचना पर पहुंची पुलिस के साथ ही कई राहगीरों ने घटनास्थल का वीडियो बनाया, जिसमें नीले रंग का फार्मट्रेक कंपनी का ट्रैक्टर सड़क से नीचे पलटा हुआ और ट्रैक्टर में लगी ट्रॉली सड़क पर खड़ी साफ दिखाई दे रही है। यह भी दिख रहा है कि ट्रैक्टर पर कोई रजिस्ट्रेशन नंबर नहीं उला है। इस मामले में पुलिस ने मर्ग कायम किया था, जिसकी जांच प्रधान आरक्षक गिरीश राठौर ने की। एक दिन बाद, 27 मार्च की शाम को पुलिस थाना परवलिया सड़क में अपराध क्रमांक 60/26 पर एफआईआर दर्ज की गई।

बिजली बिल से परेशान निकायों को राहत देने प्लान

220 मेगावाट का एमपी अर्बन कैप्टिव सोलर प्लांट लगाएंगे, 184 नगर निकायों को इससे जोड़ेंगे

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में नगरीय निकायों को मिलने वाली भारी भरकम बिजली बिल से बचाव के लिए अब नगरीय विकास और आवास विभाग 220 मेगावाट का एमपी अर्बन कैप्टिव सोलर प्लांट लगाने की तैयारी में है। इसके लिए सभी दस संभागों के 184 नगर निगम, नगर पालिका और नगर परिषदों का चयन किया गया है। योजना में निकायों की हिस्सेदारी के लिए एक स्पेशल परपज वीकल बनाया जाएगा। जिसमें निकायों की हिस्सेदारी विद्युत नियामक आयोग द्वारा तय शर्तों के आधार पर घोषित की जाएगी।

नगरीय आवास और विकास विभाग द्वारा संबंधित नगर निगमों के आयुक्त और नगरपालिका, नगर परिषद के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को लिखे पत्र में कहा गया है कि प्रदेश में शहरवासियों को पानी, बिजली, जल मूल निकासी, स्वच्छता और सड़क की सुविधा देने के लिए खपत होने वाली बिजली के बिल नगरीय निकायों पर भारी पड़ रहे हैं।

निकायों की आमदनी का 30 से 40 प्रतिशत फंड इन कार्यों में बिजली बिल में खर्च हो जाता है। आने वाले दिनों में इसमें और वृद्धि होना तय है। इसे देखते हुए निकायों की आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार प्रयास कर रही है। बिजली बिलों में कमी आने से आम जन को बेहतर सेवा मिल सकेगी।

अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी लगाएगी सोलर प्लांट- निकायों को भेजे पत्र में कहा गया है कि केंद्र और राज्य सरकार सोलर और विंड एनर्जी के अधिकाधिक उपयोग के लिए निर्देश दे रहे हैं, ताकि बिल कम होने से निकाय आत्मनिर्भर बन सकें। इसी तारतम्य में सभी निकायों के वर्तमान और प्रस्तावित



योजनाओं के हार्ड टेंशन लाइन कनेक्शनों के स्वीकृत और प्रस्तावित लोड को देखते हुए 220 मेगावाट का एमपी अर्बन कैप्टिव सोलर प्लांट स्थापित करने का फैसला राज्य सरकार ने लिया है।

इस सोलर प्लांट का क्रियान्वयन राज्य शासन के उपक्रम एमपी अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी द्वारा किया जाएगा। इस प्लांट में प्रोजेक्ट इंडिक्ट्री में उपयोगकर्ता की कम से कम 26 प्रतिशत भागीदारी रखने और सोलर एनर्जी प्लांट का स्वयं 51 प्रतिशत से अधिक हर साल उपयोग किया जाना अनिवार्य किया गया है।

1320 करोड़ है प्रस्तावित प्लांट की लागत- प्रस्तावित परियोजना की अनुमानित लागत 1320

करोड़ रुपए है। इसलिए परियोजना में सहभागी नगरीय निकायों की संयुक्त इंडिक्ट्री 119 करोड़ रुपए होती है जो कि नगरीय निकायों को दिए जाने वाले अनुदान राशि से उपलब्ध कराई जाएगी। निकाय के हिस्से की बाकी राशि के लिए सामूहिक म्युनिसिपल बॉन्ड बुलयाया जाना भी प्रस्तावित है।

इसमें यह जानकारी भी दी गई है कि योजना में निकायों की हिस्सेदारी के लिए एक स्पेशल परपज वीकल बनाया जाएगा जिसमें निकायों की हिस्सेदारी विद्युत नियामक आयोग द्वारा तय शर्तों के आधार पर घोषित की जाएगी। इसके लिए अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी को अधिकृत किया गया है।

गर्मी से बचने 20 कूलर के साथ निकाली बारात

प्रदेश में आज 15 जिलों में लू चलेगी, 44.8 डिग्री के साथ खजुराहो सबसे गर्म



भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश का ट्रिस्ट्रि स्पॉट खजुराहो सबसे 'हॉट' बना हुआ है। तापमान 44.8 डिग्री सेल्सियस रहा। भोपाल में पारा 43.6 डिग्री पहुंच गया, जो 10 साल में दूसरा और सीजन का सबसे गर्म दिन रहा। साइबोलॉजिकल सर्वेलेशन (चक्रवात) के

एक्टिव होने से उत्तरी हिस्से यानी, ग्वालियर, चंबल-सागर संभाग में पारे में मामूली गिरावट दर्ज की गई है। ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, विदिशा, सागर, रायसेन, मंडला और छिंदवाड़ा में लू का अलर्ट है।

खजुराहो, सीधी-श्योपुर में पारा 44 डिग्री पार

इससे पहले खजुराहो समेत कई शहरों में तापमान 44 डिग्री के पार ही रहा। ट्रिस्ट्रि स्पॉट खजुराहो में तापमान सबसे ज्यादा 44.8 डिग्री रहा। हालांकि, सोमवार को तुलना में 1.2 डिग्री की गिरावट हुई है। सीधी में 44.6 डिग्री, श्योपुर में पारा 44 डिग्री रहा। इसी तरह रायसेन में 43.8 डिग्री, उमरिया में 43.5 डिग्री, खंडवा में 43.4 डिग्री, मुरैना में 43.3 डिग्री, मंडला में 43.2 डिग्री, रतलाम-दमोह में 43 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। प्रदेश के 5 बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 43.6 डिग्री, इंदौर में 42.2 डिग्री, ग्वालियर-उज्जैन में 41 डिग्री और जबलपुर में पारा 42.7 डिग्री सेल्सियस रहा।

प्रधानमंत्री ने किया काशी विश्वनाथ मंदिर में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का अवलोकन

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी को बताया आधुनिक तकनीक और प्राचीन ज्ञान का अद्भुत संगम

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर में स्थापित विश्व की अनूठी 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी' का सुक्ष्म अवलोकन किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने घड़ी के डिजिटल फलक पर प्रदर्शित हो रहे भारतीय पंचांग, मुहूर्त और ग्रह-नक्षत्रों की गणना की सराहना करते हुए इसे आधुनिक तकनीक और प्राचीन ज्ञान का अद्भुत संगम बताया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा वर्ष 2024 में कालगणना के केन्द्र महाकाल की नगरी उज्जैन में विक्रमादित्य वैदिक घड़ी की स्थापना की गई थी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की गौरवशाली अतीत को सहेजते हुए उसे वर्तमान में जीवंत बनाए रखने की मंशानुरूप वैदिक घड़ी को देश के सभी ज्योतिर्लिंगों में स्थापित किया जा रहा है। सर्वप्रथम बाबा विश्वनाथ को विक्रमादित्य वैदिक घड़ी अर्पित की गई थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वैशाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदा (3 अप्रैल 2026) को यह घड़ी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ को भेंट की थी, जिसे 4 अप्रैल को मंदिर प्रांगण में स्थापित किया गया था।

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी को वैदिक काल गणना के समस्त घटकों को सम्वत कर बनाया गया है। यह घड़ी सूर्योदय से परिचालित है, जिस स्थान पर जो सूर्योदय का समय होता है उस स्थान की काल गणना तदनुसार दिखाई देती है। स्टैंडर्ड टाइम भी उसी से जुड़ा रहता है। इस घड़ी में वैदिक समय, लोकेशन, भारतीय स्टैंडर्ड टाइम, भारतीय पंचांग, विक्रम सम्वत् मास, ग्रह स्थिति, भद्रा स्थिति, चंद्र स्थिति आदि की जानकारी समाहित है।



जानिए क्या है 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी'

भारत का समय- पृथ्वी का समय- संस्कृति विभाग अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोषपीठ, उज्जैन द्वारा भारतीय कालगणना पर आधारित विश्व की प्रथम विक्रमादित्य वैदिक घड़ी स्थापित की गई है। यह घड़ी भारत की प्राचीन कालगणना परंपरा को आधुनिक डिजिटल तकनीक के माध्यम से पुनर्स्थापित करने का एक अभिनव प्रयास है। प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का लोकार्पण फाल्गुन 2080, कृष्ण पक्ष, पंचमी, वरुण मुहूर्त (13वें मुहूर्त) में किया गया। (दिनांक 29 फ़रवरी 2024)



भोपाल (नप्र)। अतिथि शिक्षक संयुक्त मोर्चा के बैनर तले प्रदेशभर से आए हजारों अतिथि शिक्षकों ने बुधवार को भोपाल में सरकार की वादाखिलाफी के विरोध में प्रदर्शन किया। आंदोलन के दौरान शिक्षकों ने एकजुट होकर अपनी लंबित मांगों को पूरा करने की मांग उठाई और चेतावनी दी कि जल्द समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष सुनील सिंह परिहार ने कहा कि विधानसभा चुनाव से पहले राज्य सरकार ने अतिथि शिक्षकों के लिए पुरस्कारों की तर्ज पर नीति लागू करने, सीधी भर्ती में बोनस अंक देने और वार्षिक अनुबंध के माध्यम से भविष्य सुरक्षित करने का वादा किया था, लेकिन अब तक इन पर कोई अमल नहीं हुआ है। इससे शिक्षकों में भारी आक्रोश है। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी अतिथि शिक्षकों को न्याय दिलाने का भरोसा दिया था, लेकिन अब तक कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया।

संगठन का सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप- वरिष्ठ पदाधिकारी रामचंद्र नागर और प्रदेश अध्यक्ष के.सी. पवार ने आरोप लगाया कि सरकार वार्षिक अनुबंध के अपने वादे से पीछे हट रही है। इसके चलते 30 अखिल के बाद करीब सवा लाख अतिथि शिक्षकों के बेरोजगार होने का खतरा है। उन्होंने मांग की कि सीधी भर्ती, प्रमोशन और ट्रांसफर से प्रभावित अनुभवी अतिथि शिक्षकों को रिक्त पदों पर प्राथमिकता से समायोजित किया जाए।

वैदिक समय प्रणाली

यह घड़ी एक सूर्योदय से अगले सूर्योदय के मध्य समय की गणना करती है। दो सूर्योदयों के बीच एक पूर्ण दिवस को 30 मुहूर्तों में विभाजित किया जाता है। सूर्योदय से सूर्यास्त - 15 मुहूर्त सूर्यास्त से अगले सूर्योदय - 15 मुहूर्त इस प्रकार एक पूर्ण वैदिक दिवस 30 मुहूर्त का होता है।

मुहूर्त, कला एवं काष्प

प्रत्येक मुहूर्त सामान्यतः लगभग 48 मिनट के बराबर होता है, किंतु इसकी अवधि घड़ी की भौगोलिक स्थिति, सूर्योदय-सूर्यास्त समय तथा सूर्य के कोण के अनुसार परिवर्तित होती है।

मुहूर्त

● 1 मुहूर्त - 30 कला ● 1 कला - 96 सेकंड ● 1 कला - 30 काष्प ● 1 काष्प - 3.2 सेकंड अर्थात् 30 मुहूर्त - 30 कला - 30 काष्प

समय निर्धारण का आधार

यह घड़ी सूर्य के कोण तथा पर्यवेक्षक की स्थान-विशिष्ट भौगोलिक स्थिति को सम्मिलित कर समय का निर्धारण करती है। सूर्योदय के समय के अनुसार ही स्थान का वैदिक समय प्रदर्शित किया जाता है।